PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 अक्टूबर 2011 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब ✿ बानी

वर्ष - नौंवा | अंक-छठा | अक्टूबर-2011 | मासिक पत्रिका

5

पूर्ण शिष्य - भाई सुंदरदास के अनुभव

(परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखारविंद से)

17

मुक्तिदाता

(वारां - भाई गुरदास जी)
सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

23

गुरु चरनों से प्रीत

(गुरु अर्जुनदेव जी की बानी)
सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

45

सवाल जवाब

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा
प्रेमियों के सवालों के जवाब

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया।**
फोन - **9950 556671 (राजस्थान)** **9871 50 1999 (दिल्ली)**
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** फोन - **9928 925304** उप सम्पादक : **नंदिनी**
अनुवादक : **मास्टर प्रताप सिंह** सहयोग : **सुमन आनन्द,** मुख्य प्रष्ठ सज्जा : **प्रथम सरधारा**
सन्त बानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)
e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in | 115 | Website : www.ajaibbani.org

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

पूर्ण शिष्य - भाई सुंदरदास के अनुभव

भाई सुंदरदास, महाराज सावन सिंह जी का नामलेवा श्रद्धालु सेवक था। महाराज सावन सिंह जी ने उसे पहले ही बता दिया था, ''सुंदरदास! तेरी घरवाली मर जाएगी, तेरा लड़का और लड़की भी मर जाएंगे; इससे तेरे दिमाग पर गहरा असर होगा। ऐसे हालात में तुझसे कत्ल हो जाएगा। तुझे बीस साल की सजा होगी मगर तुम छह साल की सजा ही काटोगे लेकिन तुझे सच बोलना होगा; मैं खुद तुम्हारी संभाल करूंगा।''

समय आने पर यह सब कुछ ही सुंदरदास के साथ बीता। उसके घर वाले उसे छुड़वाने के लिए गए। फरीदकोट के राजा का सुंदरदास के साथ बहुत प्यार था। राजा ने सोचा कि इसका बहुत नुकसान हो चुका है इसे छुड़वाया जाए। सब लोगों ने सुंदरदास से कहा कि तुम अदालत में यह कह देना कि मेरा दिमाग खराब है। सुंदरदास को अपने गुरु पर अटल भरोसा था। सुंदरदास ने थानेदार से कहा कि मैं झूठ नहीं बोलूंगा।

जब सुंदरदास जज के सामने पेश हुआ तो जज ने कहा, ''बाबा! तेरे दिमाग में नुख्स है।'' सुंदरदास ने कहा, ''मेरे दिमाग में नुख्स नहीं नुख्स तुम्हारे दिमाग में है। मैं जपजी साहब पढ़ता हूँ तुम नुख्स निकालना या तुम जपजी साहब पढ़ो मैं नुख्स निकालूँगा। मैंने कत्ल किया है तो तुम मुझे सजा क्यों नहीं देते?'' सुंदरदास के बयान के अनुसार जज ने बीस साल की सजा लिख दी। जब हिन्दुस्तान आज़ाद हुआ उस समय जेल में सुंदरदास के छह साल पूरे हो चुके थे। इस तरह वह छह साल की सजा पूरी करके रिहा हो गया। उसने कहा, ''सतगुरु ने मुझे पहले ही बता दिया था।''

जेल से छूटने के बाद सुंदरदास खूनी चक आ गया। उसने बहुत समय मेरे साथ बिताया। वह मेरे साथ लगातार अभ्यास किया करता था।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

एक बार सुंदरदास महाराज कृपाल को याद कर रहा था। महाराज कृपाल ने उसके सामने प्रकट होकर कहा, ''सुंदरदास तुमने मुझे याद किया है इसलिए मैं तुम्हारे पास आया हूँ।'' उस समय वहाँ बाबा सावन सिंह जी का एक प्रेमी सेवक धर्मचन्द भी बैठा हुआ था। महाराज कृपाल ने भाई सुंदरदास को आँखे बंद करने के लिए कहा ताकि आप उसे ऊपरी रूहानी मंडल दिखा सकें।

भाई सुंदरदास ने आँखें बंद की तो एक सुनहरे रंग की कार उसके सामने आकर खड़ी हो गई। महाराज कृपाल, सुंदरदास और धर्मचन्द उस कार में बैठ गए। कुछ ही दूरी पर उन्होंने एक अदभुत धरती देखी जहाँ कई किस्म के फलों के बगीचे थे। उन बगीचों को देखकर महाराज कृपाल ने कहा, ''यहाँ आप बिना किसी कीमत के चाहे जितने फल खा सकते हैं।'' फिर महाराज कृपाल ने कहा कि आओ अब दूसरी जगह चलें। चलते हुए वे एक संकरे रास्ते पर आ गए जिसे पार नहीं किया जा सकता था।

भाई सुंदरदास ने महाराज कृपाल से पूछा, ''हम इस संकरे रास्ते से कैसे पार होंगे?'' महाराज कृपाल ने कहा, ''बाबा सावन सिंह जी हमारे ऊपर दया कर रहे हैं। हमें उनके दिए हुए पवित्र नाम का सिमरन करना चाहिए।'' सिमरन करने से संकरा रास्ता समतल मैदान बन गया। आगे पहुँचकर उन्हें एक सुंदर भवन मिला जिसमें से दुखों को दूर करने वाली नूरानी किरणें निकल रही थी। उस भवन के अंदर एक अदभुत सिंहासन था जिस पर महाराज जी विराजमान थे। सुंदरदास ने महाराज कृपाल से पूछा, ''इस भवन में यह सुंदर नूरी प्रकाश कहाँ से आ रहा है, यह नूरी प्रकाश कब तक रहेगा?'' महाराज कृपाल ने सुंदरदास को बताया कि यह नूर और प्रकाश का देश है, यहाँ कभी अंधेरा नहीं होता।

उस समय महाराज जी का मस्तक दिव्य नूरानी किरणों से चमक रहा था जिस तरह समुद्र के किनारे सूरज का प्रकाश चमक रहा होता है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

इंसानी आँखों में उस नूर को देखने की ताकत नहीं होती। महाराज जी का रोम–रोम नूरी प्रकाश से जगमगा रहा था और उनके चारों तरफ बहुत सी आत्माएं मग्न होकर भजन–अभ्यास में बैठी हुई थी।

भाई सुंदरदास ने विनती की, ''महाराज जी! अब आप मुझे यहीं रहने दें।'' महाराज कृपाल ने कहा, ''अभी तुम्हारा इस मण्डल में रहने का समय नहीं आया है। तुम स्थूल मण्डल में रहकर अभ्यास करो वक्त आने पर मैं तुम्हें यहाँ ले आऊँगा। यहाँ कोई किसी का स्थान नहीं ले सकता। पूर्ण गुरु की संगत करने वाले सेवक ऐसे सिंहासनों के मालिक होते हैं।''

भाई सुंदरदास ने इस सारी घटना का विवरण मुझे बताया और मुझसे कहा, ''महाराज कृपाल के अंदर बाबा सावन की ताकत काम कर रही है। उसी महान हस्ती ने मुझे ये अंदरूनी नज़ारे दिखाए हैं।''

एक दिन फिर मुझे भाई सुंदरदास ने एक और घटना के बारे में बताया। सुंदरदास ने कहा कि जब मैंने अभ्यास के लिए आँखें बंद की तब मुझे बाबा जयमलसिंह जी, हुजूर सावन सिंह जी और महाराज कृपाल सिंह के स्वरूपों के दर्शन हुए। तीनों गुरुओं के दर्शन करके मुझे बहुत खुशी हुई। मैंने उनसे एक बहुत बड़ा शक दूर करने की विनती की, ''महाराज! इस समय बहुत सारे गुरु बन गए हैं। हर गुरु अपने आपको पूर्ण बता रहा है। हम पूरे गुरु की पहचान कैसे कर सकते हैं?''

बाबा जयमल सिंह जी ने कहा, ''इस बारे में तुम्हें सावन सिंह बताएगा।'' जब मैंने सावन सिंह जी से विनती की तो उन्होंने कहा, ''बेटा! गुरु के जीवनकाल में जिस प्रेमी ने अपने गुरु की आज्ञा का पालन करके ऊपरी रूहानी मण्डलों में चढ़ाई की हो वही पूर्ण गुरु है, उसके चेहरे पर सदा नूरानी चमक होती है; यही पूर्ण सन्त की पहचान है। अगर तुम और अधिक जानना चाहते हो तो दिल्ली में कृपाल के पास जाओ वह 'नाम का खज़ाना'

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

देकर दुखी आत्माओं को काल के जाल से छुड़ा रहा है। वह मेरा गुरमुख बेटा है और मैं संसार में उसके जरिए ही काम कर रहा हूँ।''

सुंदरदास बहुत भजन–अभ्यास करने वाला सेवक था। मैं और सुंदरदास लगातार आठ–आठ घंटे अभ्यास किया करते थे। हम सर्दी के दिनों में खेत में बैठकर भजन किया करते थे, सर्दी से बचने के लिए आग जला लेते थे। एक बार हम लगभग आठ घंटे तक भजन में बैठे रहे, हमारे अंदर मधुर दिव्य धुन गूँजनी शुरू हो गई, हमारी रूहें ऊपर चढ़ गईं। इस अभ्यास के दौरान एक जलती हुई लकड़ी सुंदरदास की टाँग पर गिर गई जिससे उसकी टाँग का काफी हिस्सा जल गया लेकिन वह परेशान नहीं हुआ।

सुंदरदास ने कहा कि भजन में जितना आनन्द आज आया है ऐसा पहले कभी नहीं आया। उसने बताया कि आज के अभ्यास में बाबा सावन सिंह जी और महाराज कृपाल प्रकट हुए। महाराज कृपाल ने पूछा, ''क्या तुमने कभी भीखा जी और शर्मद जी के दर्शन किए हैं?'' भाई सुंदर ने कहा मैंने सिर्फ उनके बारे में सुना ही है। तब महाराज कृपाल ने कहा, ''मेरी आँखों में देखो।'' जब उसने महाराज कृपाल की आँखों में देखा तो महाराज जी उसकी सुरत को अपने ध्यान से ऊपर ले गए। वहाँ सुंदरदास ने धर्मराज को देखा। धर्मराज ने सुंदरदास से पूछा कि तुम यहाँ क्यों आए हो? भाई सुंदरदास ने कहा, ''मुझे महाराज कृपाल ने यहाँ भेजा है। मैं भीखा जी और शर्मद जी के दर्शन करना चाहता हूँ।''

धर्मराज महाराज कृपाल का नाम सुनकर बहुत खुश हुआ और उसने सुंदरदास को अपने पास बिठाकर महाराज कृपाल का हालचाल पूछा। धर्मराज महाराज सावन सिंह जी के शिष्य से मिलकर बहुत खुश हुआ। धर्मराज ने चार दूतों को बुलाया और भाई सुंदरदास को पालकी में बिठाकर उस सीमा तक छोड़ने का हुक्म दिया। दूत उसे वहाँ तक ले गए और आगे भीखा जी और शर्मद जी की तरफ जाने वाला रास्ता बताया।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

वहाँ से भाई सुंदरदास एक जहाज में उड़ान भरकर एक स्थान पर पहुँचा। वहाँ एक बहुत ही सुंदर मुख वाला बूढ़ा आदमी बैठा था, उसने पूछा, ''तुम कौन हो और कहाँ जा रहे हो?'' भाई सुंदरदास ने कहा कि मैं स्थूल मण्डल से आया हूँ। महाराज कृपाल के बताए अनुसार भीखा जी और शर्मद जी के दर्शन करने जा रहा हूँ। उस बूढ़े आदमी ने कहा कि वह जिस जहाज पर सवार है वही जहाज उसे भीखा जी और शर्मद जी के पास ले जाएगा।

यह जहाज किसी संसारिक नाशवान पदार्थ का बना हुआ नहीं था बल्कि 'शब्द–नाम' का जहाज था। उस जहाज ने फिर उड़ना शुरू कर दिया और उस स्थान पर ले गया जहाँ भीखा जी और शर्मद रहते थे। वहाँ एक पहरेदार था। सुंदरदास ने उस पहरेदार से कहा कि वह यहाँ महाराज कृपाल के हुक्म से आया है पहरेदार ने उसे सीढ़ी से ऊपर जाने के लिए कहा। भाई सुंदरदास ने हर सीढ़ी के कदम पर 'शक्तिशाली कृपाल' और 'रक्षक कृपाल' की आवाज़ें गूँजती हुई सुनी। कदम–कदम पर सूरज और चंद्रमा भी यही गा रहे थे। चारों तरफ प्रकाश बिखरा हुआ था।

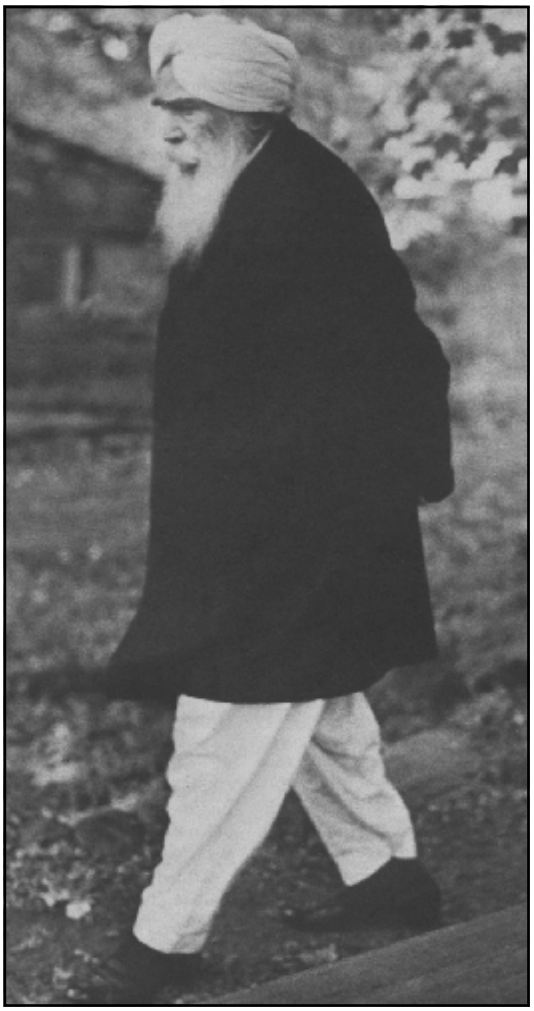

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जब वह सीढ़ियों से ऊपर पहुँचा तो वहाँ बाबा सावन सिंह जी प्रकट हुए और उन्होंने एक सेवादार को हुक्म दिया कि वह उसे भीखा जी और शर्मद जी के पास ले जाए। वहाँ जुबान से नहीं विचारों से बातचीत हुई। सेवादार उसे ऊपर लेकर गए तो दरवाजा खुला, उसने दोनों दिव्य महान हस्तियों के दिल खोलकर दर्शन किए। बाद में सेवादार उसे नीचे ले आया। उसकी आत्मा स्थूल शरीर में लौट आई तब भाई सुंदरदास के शरीर में दर्द और तकलीफ शुरू हो गई।

हम भाई सुंदरदास को गंगानगर के मशहूर डाक्टर कपूर सिंह के पास लेकर गए। डाक्टर ने सलाह दी कि टाँग काटनी पड़ेगी। कुछ समय बाद महाराज कृपाल आए तो आपने कहा, ''घबराने की कोई बात नहीं नीम या चूने का पानी लगाओ टाँग ठीक हो जाएगी।'' ऐसा करने से टाँग जल्दी ठीक हो गई जबकि टाँग की हड्डी भी जल गई थी। उसके बाद सुंदरदास कई साल तक जीवित रहा।

एक दिन परम पिता कृपाल सच और झूठ के भेद के बारे में स्पष्ट कर रहे थे उस समय आप मस्ती में भरे हुए थे। आपके शरीर का रोम–रोम नूरी प्रकाश की किरणों को बिखेर रहा था। उस समय जिसने भी आपके दर्शन किए उसने स्वीकार किया कि महाराज जी ज्योति स्वरूप थे लेकिन यह नज़ारा उनके लिए था, जिनकी आँखे खुली थी बाकियों के लिए आप केवल देह स्वरूप थे।

भाई सुंदरदास ने महाराज कृपाल से विनती की कि मुझे वह जगह दिखाएं जहाँ झूठे गुरुओं को भेजा जाता है जिन्होंने रूहानियत के नाम पर बहुत पाप किए होते हैं, उन्हें क्या दण्ड मिलता है? महाराज कृपाल ने सुंदरदास को आँखें बंद करने के लिए कहा, जब उसने आँखें बंद की तो आप उसकी आत्मा को नर्क में ले गए। वहाँ लगभग पाँच सौ झूठे गुरु थे जिन्हें रोज़ एक नया दण्ड दिया जाता था। कुछ एक को तपते हुए लोहे के

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

खंभो पर खड़ा किया गया था, उनकी जीभें जंजीरों के बड़े–बड़े भारी पत्थरों से बाँधी हुई थी। कुछ एक के सिरों पर बड़े–बड़े भारी पत्थर रखे हुए थे और जानवर चोंचों से उनके माँस को नोच रहे थे। कुछ झूठे गुरुओं को जमीन में गाड़ दिया गया था तपते हुए लोहे के सरिए उनके मुँह में डाले जा रहे थे, उन्हें बचाने वाला कोई नहीं था। चारों तरफ से चीखने की आवाज़े आ रही थी।

भाई सुंदरदास ने धर्मराज से पूछा कि ये आत्माएं कौन हैं जिन्हें इतनी निर्दयता से दण्ड दिया जा रहा है? धर्मराज ने कहा कि ये वे इंसान हैं जो स्थूल संसार में झूठे गुरु बनें, इन्होंने भक्ति नहीं की ये रूहानी कार्य के काबिल नहीं थे और इन्होंने झूठा दिखावा करके अपने सेवकों को धोखा दिया, ये पार्टियों के जोर से झूठे गुरु बने। अब ये कपटी गुरु अपने कर्मों का दण्ड भोग रहे हैं। ये बड़ी–बड़ी चोंचो वाले जानवर इनके सेवक हैं जिन्हें इन झूठे गुरुओं ने भटकाया था वे अब अपना हिसाब चुका रहे हैं।

नर्क के दूसरी तरफ कुछ झूठे गुरुओं को कीलों से दीवार में गाड़ दिया गया था और उनके नीचे आग की बड़ी–बड़ी लपटे उठ रही थी। कुछ झूठे गुरुओं को भयानक नाग डंक मार रहे थे कुछ एक को कोल्हू में डालकर पीसा जा रहा था।

भाई सुंदरदास ने यमदूतों से पूछा कि इन लोगों को ऐसे भयानक दण्ड क्यों दिए जा रहे हैं? यमदूतों ने सोचा! यह बहुत ज्यादा सवाल कर रहा है, क्यों न इसे ही दण्ड दिया जाए? यमदूतों ने सुंदरदास को बाँधकर जहरीले नागों के आगे डाल दिया। भाई सुंदरदास ने उस समय अपने गुरु को याद किया। कुछ नागों ने उसे डंक मारे लेकिन सुंदरदास पर कोई असर नहीं हुआ। यमदूतों ने सोचा कि शायद यह कोई जादूगर है तो उन्होंने सुंदरदास को बाँधकर एक कोल्हू के नीचे धकेल दिया। वह कोल्हू उसी समय टुकड़े–टुकड़े हो गया; उन टुकड़ों से यमदूत घायल हो गए।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

इसके बाद सुंदरदास की आत्मा नीचे आ गई। ऊपर उसने जो कुछ देखा वह महाराज कृपाल को बताया।

महाराज कृपाल ने मुस्कुराकर कहा, ''जो दूसरों को धोखा देते हैं वे अपने कर्मों के भुगतान से नहीं बच सकते। जो पूरे गुरु से 'नाम' लेकर गुरु से प्यार करते हैं और गुरु की आज्ञा का पालन करते हैं वे कामयाब होते हैं। पूरे गुरु के सेवक कभी अंदर से धोखा नहीं खाते। पूरे गुरु के सेवक के पैरों के नीचे अगर जहरीला नाग भी दब जाता है तो वह भी खुश होता है।''

महराज कृपाल ने सुंदरदास को बताया कि जिस समय गुरु रविदास इस संसार में आए तो रानी मीरांबाई ने रविदास जी से 'नाम' लिया। मीरांबाई के माता–पिता और पति को यह पसंद नहीं था क्योंकि गुरु रविदास जूतियाँ गाँठने का काम करते थे। रविदास जी से 'नाम' लेकर मीरांबाई ने राजघराने को बदनाम कर दिया है। उन्होंने मीरांबाई का हौंसला तोड़ने की कोशिश की लेकिन मीरांबाई ने अपना गुरु नहीं छोड़ा।

मीरांबाई के माता–पिता ने अपने एक भरोसेमंद सेवक के हाथ मीरांबाई को एक टोकरी भेजी और संदेश दिया कि हम खुश हैं कि तुमने रविदास को गुरु बनाया है। हम इस टोकरी में तुम्हें मिठाईयाँ और फूलों के हार भेज रहे हैं लेकिन उसमें एक जहरीला नाग छिपाया हुआ था। उस समय मीरांबाई अपने गुरु रविदास के पास बैठी हुई थी। मीराबाई ने टोकरी अपने गुरु के सामने रखकर कहा कि मेरे माता–पिता ने ये फूलों की मालाएं भेजी हैं। गुरु रविदास जी ने मुस्कुराकर कहा, ''अगर तुम्हारे माता–पिता ने फूलों की मालाएं भेजी हैं तो तुम इन्हें पहन लो।''

जब मीरांबाई ने टोकरी खोली तो वह नाग एक माला बन गया। चारों तरफ रविदास की जयकार जयकार होने लगी। जहरीले नाग भी पूरे गुरु के सेवकों को उनकी आज्ञा के बिना नुकसान नहीं पहुँचा सकते। धर्मराज भी भजन–अभ्यासी की कद्र करता है उसका स्वागत करता है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जब पूरे गुरु की चेताई हुई आत्माएं अंदर जाती हैं तो उन्हें रास्ते में देवी–देवता मिलते हैं। देवी–देवता पूछते हैं कि आप कहाँ जा रहे हैं? सेवक उन्हें बताते हैं कि वे अपने धुरधाम सच्चखंड जा रहे हैं। वह देश अविनाशी है वहाँ सदा सुख शान्ति रहती है। देवी–देवता भी उनके साथ चलने के लिए प्रार्थना करते हैं। तब पूरे गुरु के शिष्य उन्हें बताते हैं कि पहले स्थूल मण्डल में जन्म लें और पूरे गुरु से नाम लें तभी वहाँ जा सकते हैं।

जब देवी–देवताओं का समय पूरा हो जाता है तो वे राजा–महाराजाओं के घर में जन्म लेते हैं। जो आत्माएं नर्क से आती हैं वे गरीब और निचले परिवार में जन्म लेती हैं। यह काल के राज्य का कानून है।

सन्त–सतगुरु संसार में दीनता लेकर आते हैं। वे सर्वशक्तिमान बादशाहत से भरपूर होते हैं। वे लोगों को प्रभावित करने के लिए दीन नहीं बनते और न ही नाम और यश के भूखे होते हैं। परमात्मा उनमें असीम दीनता भर देता है। कबीर साहब ने अपने जीवन में ताना बुना। नामदेव जी ने कपड़ो की रंगाई का काम किया। रविदास जी ने जूते गाँठकर ईमानदारी से रोजी–रोटी कमाई। सन्त–महात्मा अपना जीवन नर्क से आई हुई आत्माओं की सेवा में बिताते हैं। यह प्यार के सागर परमात्मा की दया है।

राजा–महाराजा अहंकार में रहते हैं, सन्तों की शरण नहीं लेते जिसका नतीजा यह होता है कि वे अच्छे कर्मों को गँवाकर नर्कों में जाते हैं। मीरांबाई के माता–पिता को राजपूत होने का अहंकार था इसी कारण उन्होंने मीरांबाई को जहरीला नाग भेजा लेकिन गुरुदेव ने उसे बचा लिया।

आगे बहुत ही खतरनाक समय आने वाला है। आमतौर पर लोग भजन–अभ्यास नहीं करते, दिखावे के लिए सन्तों के पास जाते हैं। लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए भजन गाते हैं, गुरु के साथ फोटो खिंचवाते हैं ताकि लोग देखें कि ये लोग सतगुरु के मिशन में कितना ऊँचा स्थान रखते हैं। जब गुरु संसार छोड़ देते हैं तो ऐसे लोग गुरु बन जाते हैं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आठवें गुरु हरिकृष्ण ने थोड़ा सा ईशारा किया था कि अगला गुरु बकाला में होगा। बाईस लोगों ने गुरु बनने का ढ़िढ़ोरा पिटवा दिया। जब बाईस गुरु–गद्दियों ने काम करना शुरू किया तो संगत कई भागों में बँट गई लेकिन जो सच्चा था वह परमात्मा में लीन था, गुरु के प्यार में डूबा हुआ था और छिपा हुआ था। शब्द–अभ्यासी भीड़भाड़ से दूर रहते हैं।

हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सच्चे गुरु की तलाश करनी चाहिए इसी में भलाई है। उस प्रेमी की तलाश करें जो अविनाशी शब्द में समाया हो।''

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''जो परमात्मा में समा जाते हैं उनका मुख उज्जवल होता है। उनके अंदर शान्ति होती है। उनमें से दिव्य संगीत गूँजता रहता है। वे परमात्मा में और परमात्मा उनमें समाया होता है। सदा ऐसे साधु के चरणों की धूल लेनी चाहिए।''

जो लोग धन–दौलत और मान के भूखे होते हैं उनके अंदर से गुरु का प्रकाश चला जाता है उनका रंग–रूप मुरझा जाता है लेकिन गुरु के प्रेमियों के चेहरे सदा ताजगी और नूर से चमकते रहते हैं। बहुत से प्रेमी इस मार्ग पर चलकर अभ्यास करते हैं लेकिन जब वे पहला या दूसरा मण्डल पार कर लेते हैं तो उन्हें पूरा गुरु मान लिया जाता है। ऐसे लोगों में ऋद्धि–सिद्धि आ जाती है और संसार ऋद्धि–सिद्धि के पीछे होता है लोग उनके पीछे लग जाते हैं।

किसी को गुरु स्वीकार करने से पहले आप यह देखें! क्या उसने अपने जीवन काल में अभ्यास किया है, क्या उसने अपनी ज़िदगी का अधिकतर हिस्सा परमात्मा की याद में बिताया है? जो खुद अंदर नहीं गया वह दूसरों को कैसे अंदर ले जा सकता है? पढ़ा–लिखा ही पढ़ा सकता है; पहलवान ही पहलवानी सिखा सकता है। हमें किसी को गुरु मानने से पहले इन सब बातों की तसल्ली कर लेनी चाहिए।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भाई सुंदरदास की माता भी महाराज सावन सिंह जी की नामलेवा थी। जब उसका अंत समय आया वह 114 वर्ष की थी। अंत समय में सुंदरदास, सुंदरदास का भाई उजागर सिंह और उनके रिश्तेदार भी वहाँ मौजूद थे। सुंदरदास ने अपनी माता से पूछा, ''क्या आप सतगुरु का नूरी स्वरूप देख रही हैं क्या सतगुरु आपको लेने आए हैं?''

सुंदरदास की माता ने कहा, ''मुझे दुनियावी ख्याल आ रहे हैं मेरी आँखों में परिवार के लोगों की शक्लें आ रही हैं।'' फिर सुंदरदास ने अपनी माता से कहा, ''आप सभी ख्यालों को छोड़कर पाँच नामों का सिमरन करें।'' तब भी माता ने कहा कि गुरु स्वरूप नहीं आ रहा। तब भाई सुंदरदास ने कहा कि महाराज की कार का ध्यान करें, सतसंग में बैठकर महाराज जी किस तरह हँसा करते थे? ऐसा सुनते ही माता ने खुशी से कहा, ''मेरे सामने गुरु स्वरूप आ गया है।''

सुंदरदास ने माता से पूछा, ''सतगुरु के साथ और कौन है?'' माता ने कहा, ''सतगुरु के साथ धर्मराज है उसके पास एक किताब है वह उस किताब में देख रहा है कि अभी मुझे कुछ कर्मों का लेखा चुकाना है। महाराज जी धर्मराज से कह रहे हैं कि वे खुद मेरे कर्मों का भुगतान करेंगे क्योंकि मैं उनकी आत्मा हूँ।'' फिर भाई सुंदरदास ने माता से पूछा, ''क्या धर्मराज महाराज जी के पास बैठा हुआ है?'' माता ने बताया, ''महाराज जी बहुत बड़े आसन पर बैठे हुए हैं और धर्मराज उनके पास खड़ा हुआ है।''

भाई सुंदरदास ने माता से पूछा, ''क्या आप महाराज जी और धर्मराज को साफ–साफ देख रही हैं और दोनों में कौन ज्यादा खूबसूरत है?'' माता ने कहा, ''धर्मराज गोरे रंग का है उसका मस्तक आम इंसान जैसा है लेकिन महाराज जी बहुत ही खूबसूरत हैं और नूरी प्रकाश से जगमगा रहे हैं। उनकी आँखों में इतना तेज है कि मैं उनकी आँखों में नहीं देख पा रही हूँ।'' भाई सुंदरदास ने माता से कहा, ''महाराज जी से पूछो कि वे आपको

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कब ले जाएंगे?'' माता ने तुरंत जवाब दिया, ''मेरे सारे कर्मों का भुगतान हो चुका है महाराज जी मुझे आज ही लेकर जाएंगे।''

भाई सुंदरदास ने माता से फिर विनती की, ''आप केवल महान सतगुरु को याद करें।'' माता ने कहा कि महाराज जी मेरे सामने खड़े हैं, मैं उनके दर्शन कर रही हूँ, अब मेरा ख्याल किसी और तरफ नहीं है। उसके बाद माता ने खुशी से यह कहते हुए चोला छोड़ा कि मैं अपने सतगुरु के साथ सच्चखंड जा रही हूँ।

सुंदरदास ने अपनी ज़िंदगी का आखिरी समय मेरे पास बिताया। जब उसका अंत समय आया उसके कुछ समय पहले ही उसने मुझसे कहा, ''मेरे अंत समय के कपड़े अभी बनवा दो अगर किसी को कुछ अन्न–पानी खिलाना है तो वह भी खिला दो।''

हमने माहवारी सतसंग में संगत को अच्छा भोजन दिया। सुंदरदास ने मुझे बताया कि मालिक खुश है। मैं उसके पास बैठ गया। उसकी एक बूढ़ी बहन थी, वह दुखी रहती थी; उस समय वह भी उसके पास बैठी थी। सुंदरदास ने कहा, ''मैं विनती करता हूँ इस समय दरबार खुला है यह भी मेरे साथ चले।'' मैंने कहा कि इससे पूछो। जब उसकी बहन ने यह बात सुनी तो वह उठकर बाहर चली गई। सुंदरदास ने शरीर छोड़ने से पहले बताया कि बाबा जयमल सिंह जी, महाराज सावन सिंह जी और महाराज कृपाल उसे लेने के लिए आए हैं। यह कहकर उसने शरीर छोड़ दिया।

सुंदरदास के भरोसे के अनुसार उसका अंत समय उसी तरह हुआ। हमने उसे प्यार से स्नान करवाया और कपड़े पहनाकर बिठा दिया। जिन लोगों ने बाबा सावन के दर्शन किए हुए थे उन लोगों ने बताया कि सुंदरदास की शक्ल बाबा सावन सिंह जी की तरह लग रही थी। सुंदरदास की नाक भी बाबा सावन की तरह ही थी। वह दिखने में भी महाराज सावन सिंह जी जितना ही लम्बा था।

* * *

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मुक्तिदाता

वारां – भाई गुरदास जी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

नशे का आदी नशे वाले से प्यार करता है और जुआरी दूसरे जुआरी से प्यार करता है इसी तरह 'नाम' की भक्ति करने वाला भी भक्ति करने वाले से ही प्यार करता है। आपने इस जगह के बारे में सन्तबानी मासिक पत्रिका में बहुत कुछ पढ़ा है। परमात्मा इंसान का चोला धारण करके इस जगह चलकर आया और उसने इस गरीब आत्मा की प्यास को बुझाया।

हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख और ईसाई सभी जानते हैं और विश्वास भी करते हैं कि मुक्ति 'नाम' में है लेकिन वे नाम का असली मतलब नहीं जानते; वे यह भी नहीं जानते कि हम नाम कहाँ से प्राप्त कर सकते हैं?

इंसानी जामें को सफल बनाने के लिए हमें दो चीज़ों की जरूरत पड़ती है। पहला – पूरे सतगुरु का मिलना। दूसरा – भक्ति और विश्वास। भक्ति और विश्वास इस मार्ग में सफल होने के लिए बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं। संसार में सफल होने के लिए हमें कार्यकुशलता, निपुणता और पर्याप्त धन की जरूरत होती है उसी तरह सन्तमत के मार्ग में भी शिष्य को भरोसे और भक्ति की जरूरत होती है।

इस रास्ते पर कामयाब होने के लिए हमें घर–परिवार छोड़कर जंगल में जाने की जरूरत नहीं है। सन्त हमें किसी बाहरी कर्मकांड में नहीं फँसाते। हम घर में रहते हुए और दुनियावी जिम्मेवारियों को उठाते हुए आसानी से 'नाम' की भक्ति कर सकते हैं।

हम लोग दुनियावी कामों को दिल लगाकर करते हैं अगर हम थके हों तो भी दुनियावी काम करना चाहते हैं क्योंकि इन कामों में हमें आनन्द

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

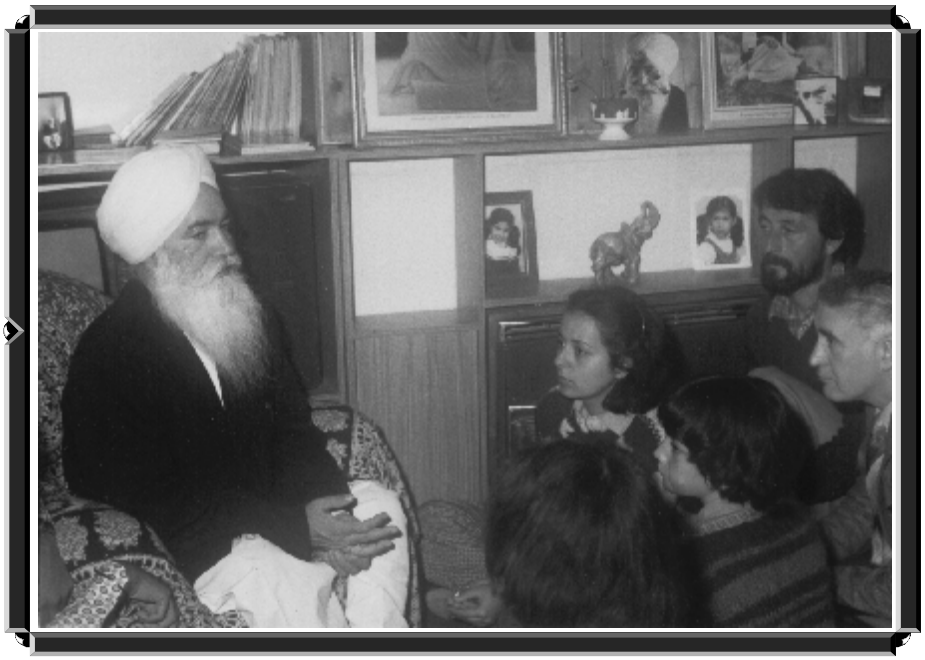

मिलता है लेकिन रूहानी काम को अहमियत नहीं देते। हम सांसारिक भोगों को भोगना बंद नहीं करते और कहते हैं कि यह सब कुदरती काम हैं। हम चाहे! कितने ही साल इस रास्ते पर चलते रहें लेकिन तहे दिल से भक्ति न करने के कारण हम सन्तमत के मार्ग पर डाँवाडोल रहते हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''आप जब तक आत्मा को खुराक न दे लें तब तक शरीर को खुराक न दें। शरीर की खुराक अन्न और आत्मा की खुराक भजन है लेकिन सच्चा–सुच्चा जीवन इससे भी ऊपर है।''

आपके आगे राजा जनक के बारे में एक छोटा सा शब्द रखा जा रहा है। राजा जनक भारत का एक मशहूर राजा था। वह राजा होने के साथ–साथ एक बहुत बड़ा अभ्यासी था; वह एक पूर्ण सन्त था। बड़े–बड़े ऋषियों और वेद–व्यास के बेटे सुखदेव मुनि ने आपको अपना गुरु धारण किया था। वह राजा के रूप में जिम्मेवारियाँ निभाता हुआ भक्ति भी करता था।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कबीर साहब कहते हैं, ''जैसे ऊँट किले पर नहीं चढ़ सकता और गेंद ऊँट की पीठ पर नहीं टिक सकती उसी तरह राजा होकर परमात्मा की भक्ति करना भी हैरानी की बात है।''

मैंने आपको राजा जनक के अभ्यास के बारे में बताया है कि वह अभ्यास में परिपूर्ण था। बहुत से सन्तों ने राजा जनक के पूर्ण होने के बारे में बहुत कुछ कहा है। जब राजा जनक शरीर छोड़कर अपने धाम को जाने लगे रास्ते में नर्कों में जीवों की चीख–पुकार सुनकर उन्होंने धर्मराज से पूछा, ''ये जीव क्यों कुरला रहे हैं? तुम इनको आजाद क्यों नहीं करते?'' धर्मराज ने उत्तर दिया, ''मैं अविनाशी सर्वशक्तिमान परमात्मा का बेटा हूँ। मैं परमात्मा के हुक्म से न्याय करता हूँ इन आत्माओं को आजाद करना मेरे वश में नहीं है। इन जीवों ने संसार में बहुत अत्याचार किए हैं, जिसकी इन्हें सजा दी जा रही है।'' राजा जनक ने कहा, ''मैं एक तरफ अपना सिमरन रखता हूँ, जितने जीव मेरे सिमरन के बराबर आ जाएं तुम उन्हें छोड़ देना।'' राजा जनक ने एक घड़ी का सिमरन रखा, नर्कों के सारे कुंड खाली कर दिए।

धन धन राजा जनक है जिन सिमरन कियो विवेक।
एक घड़ी के सिमरने पापी तरे अनेक।

आप जानते हैं कि जो 'शब्द–नाम' की भक्ति करते हैं वे बहुत ही दयालु होते हैं। उनके अंदर दूसरों के लिए बहुत हमदर्दी और दया होती है। वे जब दूसरों का रोना–चिल्लाना सुनते हैं तो उनका हृदय पिघल जाता है। राजा जनक का हृदय पिघल गया। जो भजन–सिमरन करते हैं उनमें बहुत शक्ति आ जाती है, उनमें बहुत दया होती है। भजन करने वाला लाखों रोती चीखती आत्माओं को नर्कों से छुटकारा दिलवा सकता है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जो काम एक आदमी कर सकता है उसी काम को दूसरा आदमी भी कर सकता है।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मुक्तिदाता

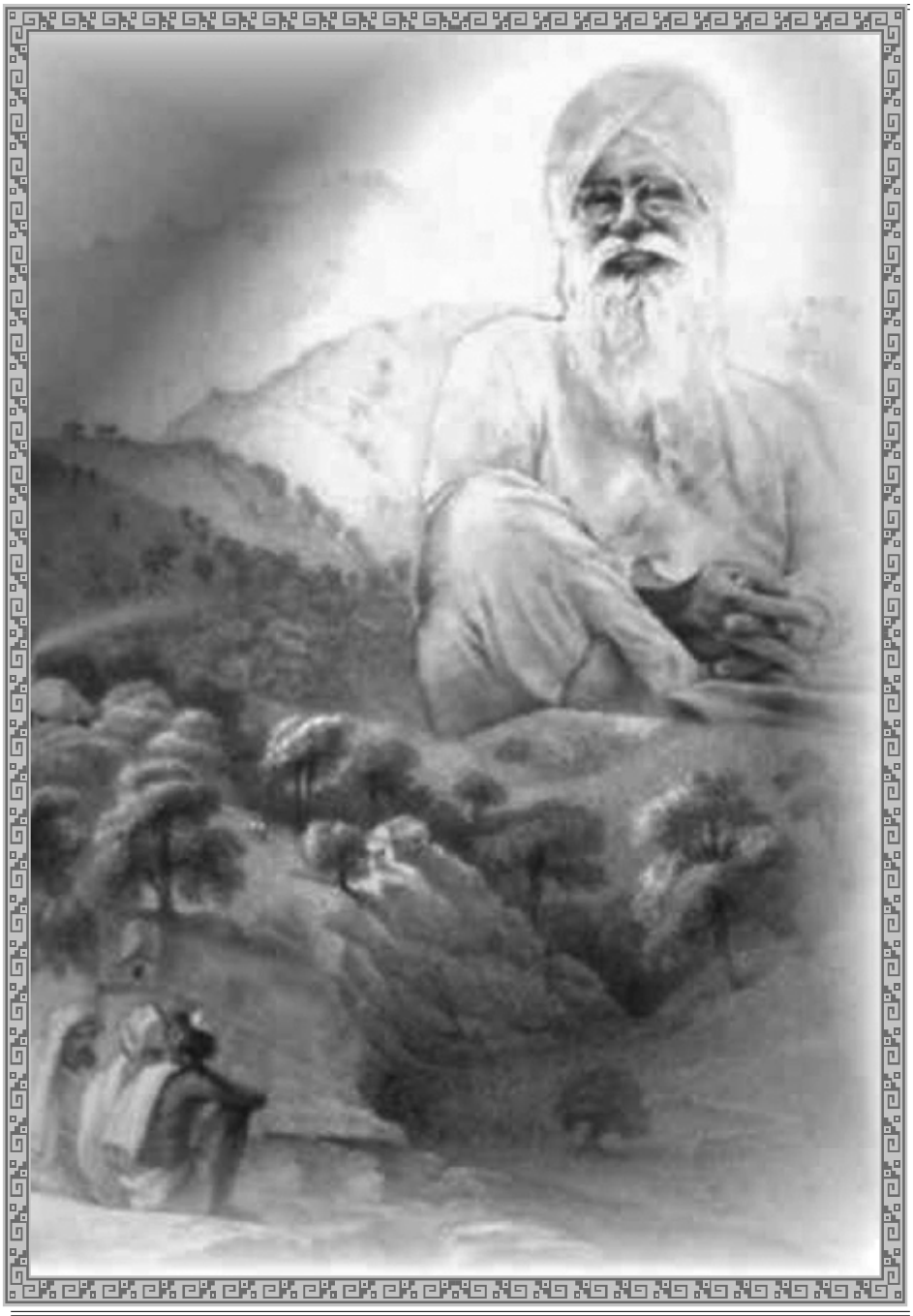

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जो अभ्यास राजा जनक ने किया क्या हम नहीं कर सकते? हमें भी वही 'नाम' मिला है हमें भी उसी 'नाम' के साथ जोड़ा गया है। हम भी राजा जनक की तरह भक्ति कर सकते हैं।'' कबीर साहब कहते है:

जैसी लौ पहले लगी तैसी निभैहि ओड़।
अपनी देह की क्या गति तारे पुरुष करोड़।

जब हम गुरु के पास जाते हैं पहले दिन हमारे अंदर बहुत भक्तिभाव होता है अगर 'नामदान' लेने के बाद भी हम वही भक्तिभाव कायम रखें और सतगुरु की हिदायत के अनुसार अभ्यास करें तो हम अपने आपको ही नहीं तार सकते बल्कि लाखों दुःखी आत्माओं का उद्धार कर सकते हैं।

भगतु वडा राजा जनकु है गुरमुखि विचि उदासी।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''राजा जनक बहुत बड़ा भक्त था। सर्वशक्तिमान परमात्मा ने उसे बहुत माया सांसारिक धन–पदार्थ दिया हुआ था फिर भी ये चीज़े उसे खुश नहीं कर सकी क्योंकि उसे पता था कि उसने अपने सच्चे घर वापिस जाना है।''

देव लोक नो चलिआ गण गंधरबु सभा सुखवासी।
जमपुरि गइआ पुकार सुणि विललावनि जीअ नरक निवासी।

अब आप कहते हैं, ''जब राजा जनक को सतलोक ले जाने के लिए धर्मराज देवी–देवताओं के साथ आया तब रास्ते में राजा जनक ने नर्कों से चीखने–चिल्लाने की आवाज़े सुनी तो वह दुखी आत्माओं को मुक्त करवाने के लिए नर्क में गया और वहीं रूक गया।''

धरमराइ नो आखिओनु सभना दी करि बंद खलासी।
करे बेनती धरमराइ हउ सेवकु ठाकुरु अबिनासी।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

राजा जनक ने धर्मराज से कहा, ''तुम इन आत्माओं को मुक्त क्यों नहीं करते? तुम इन्हें इतनी तकलीफ क्यों दे रहे हो?'' धर्मराज ने कहा, ''मैं अविनाशी परमात्मा का सेवक हूँ; मैं कुछ नहीं कर सकता।''

गहिणे धरिओनु इकु नाउ पापा नालि करै निरजासी।
पासंगि पापु न पुजनी गुरमुखि नाउ अतुल न तुलासी।

भाई गुरदास जी कहते हैं कि राजा जनक ने धर्मराज से कहा, ''मैं एक घड़ी का सिमरन देता हूँ तुम इस सिमरन को तराजू में रखकर इस तरह तोलो जैसे गहने तोले जाते हैं।'' राजा जनक का एक घड़ी का सिमरन नर्क में चीखने–चिल्लाने वाली अनगिनत रूहों पर भारी पड़ा।

नरकहु छुटे जीअ जंत कटी गलहुँ सिलक जम फासी।
मुकति जुगति नावै दी दासी।।

भाई गुरदास कहते हैं कि 'नाम' में इतनी शक्ति होती है कि धर्मराज ने नर्क में जितनी रूहों को जंजीरों से बाँध रखा था सिमरन ने उन जंजीरों को तोड़ डाला। वे जंजीरे गुरमुख के नाम की ताकत से टूट गई क्योंकि मुक्ति केवल 'नाम' का अभ्यास है। * * *

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

गुरु चरनों से प्रीत

गुरु अर्जुनदेव जी की बानी

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

करो मन गुरु चरनों से प्रीत,
गुरु चरनों से प्रीत, करो मन गुरु चरनों से प्रीत, (2)

1. यह सपनों का जाल सुहाना, यह दुनियां है रैन बसेरा,
चला–चली के इस मेले में, सांझ ढली और उखड़ा डेरा, (2)
वर्तमान होता जाता है, पल–पल यहाँ अतीत,
करो मन **गुरु चरनों से प्रीत**

2. नौकर–चाकर ठाठ–बाट ये, भरी तिज़ोरी में यह माया,
प्राण पखेरू उड़ जाएं तो, साथ नहीं जाती यह काया, (2)
सभी चिता पर रखकर आते, सुत सम्बंधी मीत,
करो मन **गुरु चरनों से प्रीत**

3. रात अंधेरी राह अजानी, गहरी नदिया नाव पुरानी,
सोते–सोते बीत गए युग, अब तो जाग अरे अज्ञानी, (2)
विघ्न विनाशक गुरु नाम है, जीवन का संगीत,
करो मन **गुरु चरनों से प्रीत**

4. लोहे को सोना कर देता, इतना पावन नाम तुम्हारा,
पल में सात धाम जा पहुँचा, जिसने मन से तुम्हें पुकारा, (2)
कृपाल 'अजायब' के सदा सहाई, जन्म–जन्म का मीत,
करो मन **गुरु चरनों से प्रीत**

परम पिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर दया की, वह दया लफ्ज़ों में ब्यान नहीं की जा

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सकती। उस महान गुरु ने मेरे घर आकर मुझ पर इस तरह से दया की जैसे रविदास ने धोबियों की लड़की पर की थी।

मैं कई बार महात्मा रविदास की कहानी सुनाया करता हूँ। राजा पीपा राजपूत था उसका परमार्थ की तरफ ख्याल था; उसने अपने पूर्वजों के मुताबिक घर में देवी का मंदिर बनाया हुआ था। जब बारिश होनी होती है तब आसमान में बादल छा जाते हैं और किसान आशा करते हैं कि बारिश होगी हमारी फसलें लह लहाएंगी।

जब परमात्मा ने हमारे ऊपर मेहर करनी होती है अपने साथ हमारा मिलाप कराना होता है तो हमें सपनों में महात्मा के दर्शन होने लग जाते हैं, हम आस–पड़ोस से पूछना शुरु कर देते हैं। हमें जहाँ से भी परमार्थ की बातें मिलती हैं हम वहाँ बिना रोक–टोक जाते हैं। जिसे प्यास लगी होती है वह नखरे नहीं करता कि यह पानी हिन्दू का है या मुसलमान का है?

पिछले जमाने में पानी पर ही बहुत सारे झगड़े हुआ करते थे कि यह पानी हिन्दु का है या मुसलमान का है? ऐसा नहीं अगर पानी मुसलमान के हाथ में चला गया तो उसकी शक्ति कम हो जाएगी, हिन्दू के पास आ गया तो उसमें ज्यादा शक्ति आ जाएगी।

राजा पीपा के अंदर आकाशवाणी होती थी। वह जब सोता तो उसे ऐसा लगता कि कोई उसे उठाकर कह रहा है, ''पीपा! पूर्ण सन्त ढूँढ़ नहीं तो काल खाल उतार देगा, काल की सजा बहुत सख्त है।'' राजा पीपा के दिल में परमार्थ की इच्छा पैदा हुई; उसके दिल में प्यार था इसलिए उसने घर में मन्दिर बनाया हुआ था।

आखिर पीपा ने अपने अहलकारों से पूछा, ''कोई मुक्ति का साधन है?'' अहलकारों ने कहा, ''कबीर साहब तो इस समय संसार में नहीं हैं। रविदास बहुत अच्छे महात्मा हैं।'' मन कोई समय हाथ से नहीं जाने देता। पीपा के दिल में ख्याल आया कि मैं एक राजपूत हूँ और रविदास चमार हैं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

गंगा का पर्व लगा हुआ था। प्रजा गंगा के पर्व पर नहाने गई हुई थी। पीपा ने सोचा! मैं इस समय रविदास के पास जाऊँ। जब पीपा रविदास जी के पास गया तो रविदास जी चमड़े की मश्क में पानी डाल रहे थे। रविदास के दिल में दया आई कि यह एक राजा होकर मेरे घर आया है; मैं इसे कुछ दूँ। रविदास जी ने कहा, ''अच्छा भई राजा! तू यह पानी पी ले।'' पीपा के दिल में चमार वाला ख्याल तो पहले से ही था। उसने सोचा अगर मैंने यह पानी पी लिया तो मैं चमार बन जाऊँगा। खैर! महात्मा का कुछ रोब भी होता है। पीपा ने हाथ नीचे कर दिए और खुली बाजूओं वाले कुर्ते से पानी नीचे बह जाने दिया। कबीर साहब कहते हैं:

गुरु का निरख आँख और माथा, सत का नूर रहे जिस साथा।

जो लोग ध्यान टिकाकर पूर्ण महात्मा का सतसंग सुनते हैं वे जानते हैं कि उस समय महात्मा के साथ नूर और प्रकाश रहता है लेकिन जो लोग इधर–उधर झाँकते हैं वे बेचारे इस राज़ को क्या समझ सकते हैं! सब कुछ महात्मा की दृष्टि में होता है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''आँख ही आँख को देती है।''

राजा पीपा ने वापिस घर आकर धोबी को बुलाकर कहा, ''किसी को कानों कान भी पता न लगे इस कुर्ते को खड़े घाट पर धोकर लाना है।'' धोबी भट्टी तैयार करने लगा उसने अपनी लड़की से कहा कि तू यह दाग मुँह से चूस ले। लड़की अपने मुँह से दाग चूसने लगी। धोबी तो दाग चूसकर थूक को नीचे फैंक देते हैं मगर वह बच्ची उसे अंदर निगलती गई। आजकल वैज्ञानिक युग में तो दाग साफ करने के लिए बहुत सी चीजें हैं। पहले लोगों के पास ऐसे ही साधन होते थे।

वह पानी परम सन्तों के हाथ का अमृत था। बच्चे बहुत भोले–भाले होते हैं। माँ–बाप को 'नाम' मिला होता है वह अंदर गुरु से मिलाप नहीं कर सकते लेकिन बच्चों का पर्दा खुला होता है वे गुरु से सीधा सन्देश ले लेते

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हैं। यह हमारा जातिय तजुर्बा है कि बच्चे भोली आत्माएँ होती हैं। वह लड़की ज्ञान–ध्यान की बातें करने लगी। धीरे–धीरे यह खबर दूर–दूर तक पहुँच गई कि धोबी की लड़की महात्मा है; बहुत ऊँचे मण्डलों की बातें करती है। दूर–दूर से लोग उस लड़की के पास आने लगे।

धीरे–धीरे यह बात पीपा के कानों में भी पड़ी लेकिन पीपा के दिल में वही वहम था। पीपा के दिल में परमार्थ का शौक था, उसके अंदर परमात्मा से मिलने के लिए आग भड़की हुई थी। वह रात को मौका देखकर धोबी के घर गया। जब धोबी के घर पहुँचा तो वह लड़की उठकर खड़ी हो गई।

आपको पता है वह इंसान कृत्घन है जो किया न जाने, जिसका फायदा हुआ है वह कृत्घन क्यों होगा? लड़की जानती थी कि मेरे ऊपर जो दया हुई है वह इस राजा के जरिए ही हुई है। पीपा ने कहा, ''देख बेटी! मैं राजा बनकर तेरे घर नहीं आया मैं तो एक भिखारी बनकर आया हूँ।'' लड़की ने कहा, ''मैं आपको राजा समझकर खड़ी नहीं हुई, रुहानियत का जो राज़, हकीकत थी वह आपके कुर्ते में ही थी।''

जब हमें हमारी कमी का पता लग जाए उस समय हमारा मन उस कमी को बर्दाशस्त नहीं करता, रोना–पीटना शुरु कर देता है। राजा पीपा जात बिरादरी को भला–बुरा कहता हुआ रविदास जी के पास जाकर कहने लगा, ''महात्मा जी! उस समय मुझसे गलती हो गई अब आप वह चीज़ फिर मुझे दें।'' रविदास जी ने कहा, ''उस वक्त मौज थी। अब मैं तुझे 'नाम' दूंगा तू उस नाम की कमाई करना।''

आप जानते हैं कि बहुत से मरीज डाक्टर से दवाई लाकर अलमारी में रख देते हैं वे न परहेज करते हैं न दवाई खाते हैं; उनकी बीमारी कैसे दूर होगी? इसमें डाक्टर का कसूर नहीं उसने नब्ज देखकर दवाई दे दी है। इस तरह बहुत से प्रेमी नाम ले जाते हैं उन्हें अहंकार होता है कि हम नामलेवा हैं लेकिन वे कमाई नहीं करते, यह कोई गर्वमेंट सर्विस नहीं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

राजा पीपा आलापात्र था बचपन से ही उसके दिल में परमात्मा की खोज थी। जो बचपन से तैरना सीखता है उसे डूबने का खतरा नहीं रहता जिसके दिल में परमात्मा के लिए तड़फ होती है सन्त उसे थ्योरी नहीं समझाते सिर्फ आँखे चार करने की ही जरूरत होती है। जो लोग तैयारी में लगे होते हैं उन्हें थ्योरी समझानी पड़ती है। राजा पीपा ने तन, मन से कमाई की और परमगति को प्राप्त हुआ। आप गुरु ग्रंथ साहब में राजा पीपा का शब्द पढ़ सकते हैं।

गुरु ग्रंथ साहब में उन महात्माओं की बानी दर्ज है जिन्हें परमगति प्राप्त थी उनका रास्ता पाँच शब्द का था। उन महात्माओं ने जाति–पाति को नहीं लिया। जिस महात्मा से मुझे 'दो–शब्द' का भेद मिला वह कुएं का मेंढक नहीं था और न ही उन्होंने मुझे कुएं का मेंढक बनाया। मेरे अंदर नम्रता थी, प्यार था, तड़फ थी किसी महात्मा ने मुझसे कुछ नहीं छिपाया जिसके पास जो ज्ञान था उसने मुझे वह ज्ञान दिया अगर आप सच्चे दिल से जाएंगे तो जितना इल्म उसके पास है वह आपको जरूर देगा।

मेरी तड़फ को बुझाने के लिए ही परमात्मा कृपाल पाँच सौ किलो मीटर चलकर आए। मैंने पहले कभी आपकी न निन्दा सुनी थी और न प्रशंसा ही सुनी थी। आपने खुद ही संदेश भेजा कि मैंने आना है। सन्तों में अर्न्तयामिता होती है अगर हम परखेंगे तो पता चलेगा। जब आप आए तो आपने सबसे पहले यही पूछा, ''सुना भई! तेरे भजन का क्या हाल है?''

उससे एक दिन पहले मेरे रिश्तेदार आए, उनके घर पर शादी थी। उन्होंने मेरे दरवाजे पर खड़े होकर इस तरह का भजन बोला जैसे आरती उतारते हैं कि यह हमारे घर शादी में आएगा तो कुछ न कुछ लाएगा! हम लोग मतलब के बंधे होते हैं। मैंने उनकी बातें सुनी जिसका कोई मतलब नहीं था सब बातें खुष्क और परमात्मा से दूर ले जाने वाली थी। मुझे बचपन से ही कविता बोलने की परमार्थ के शब्द बोलने की आदत थी। मैंने कहा:

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आए लक्खाँ ही परौणें पर ऐसा कोई आया ना।
आपो आप सब दस्सी किसे भजन कराया ना।
गौंदे ही तुर गए ओह अपने ही गौंणे।
भाग जागे साडे वीरनो साडे आए ने सन्त परौणें।

मेरे ऊँचे भाग्य हैं मैंने बचपन में उस करन–कारण, शब्द रूप सावन की जो तस्वीर पेशावर में देखी थी वह पहली ही नज़र में मेरे दिल–दिमाग और आँखों में समा गई। मैं उस स्वरूप को आँखों से नहीं निकाल सका। मैंने एक भजन में जिक्र किया है:

जद दा सावन नज़री आया, पलकां विच लुकाया।
अजे तक ना भुल्ल ही सकया, ज्यों सावन मुस्काया।
सावन प्यारा, सावन सोहणा, सावन दिलबर जानी।
हसदा-हसदा दे गया मैंनू, कृपाल अमर निशानी।

उसी स्वरूप में परमात्मा कृपाल आए। आपने इस प्यासी आत्मा को रुहानियत का पानी नाम का अमृत पिलाया। प्यारेयो! जिसने तपती हुई आत्मा को ठंडक दी हो क्या हम साँस–साँस के साथ उसका धन्यवाद नहीं करेंगे अगर हम कृतघ्न है तो भूल जाएँगे?

आप चाहे कबीर साहब, पश्चिम के महात्मा, फारस के देशों के महात्मा की बानी लें सिर्फ भाषा का ही फर्क है। मुझे कुरान पढ़ने का बहुत मौका मिला है। कुरान के अंदर भी यही आता है कि आप वक्त के पैगम्बर की कद्र करें। अपने दिल दिमाग को खाली करके **गुरु चरनों** में बैठें। हर सन्त की बानी में चार चीज़ों का जिक्र आता है। सभी महात्माओं ने सतसंग की महिमा गाई है और उन्होंने यह भी लिखा है कि हर इन्सान सतसंग नहीं कर सकता। जिस तरह हमारे कर्मों में दुख–सुख लिखा है उसी तरह परमात्मा ने हमारी किस्मत में लिखा है कि इसने कितने सतसंग करने हैं, कब करने हैं; क्या इसे श्रद्धा आएगी? यह सब पहले से ही तय होता है। गुरु साहब कहते हैं:

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

वडभागी गुरु संगत पावे, भागहीन भ्रम चोटां खावे।

इस बार साँपला में अंग्रजों का यही सवाल था कि जब सन्त संसार में आते हैं तो थोड़े से ही आदमी उनसे नामदान प्राप्त करते हैं बाकी दुनियां का क्या हाल होता है? मैंने उनसे कहा, ''मैं आपको एक दुनियावी मिसाल बताता हूँ अगर मुल्क में आतंकवादी, अत्याचार करने वाले ज्यादा हो जाएं तो क्या गवर्मेंट उन्हें बख्श देती है कि हमारे पास जगह नहीं। गवर्मेंट ने बहुत जेलें बनायी हुई हैं और इंतजाम करने लिए फोर्स भी रखी होती है।''

इसी तरह जिस परमात्मा ने इतनी बड़ी दुनियां बनायी है वह इसकी परवरिश कर रहा है। उसने ऐसे दूत भी मुकर्रर किए हुए हैं जो ऐसी आत्मा की खबर लेते हैं। बड़े लंबे–चौड़े नर्कों के कुंड बने हुए हैं। सोचकर देखें! साँप के जामे में कितनी लंबी उम्र है उसे सारी जिन्दगी रेंगकर चलना पड़ता है कौआ सारी जिन्दगी गंद ही ढूँढ़ता रहता है; क्या यह सजा नहीं? सभी महात्माओं ने इंसान को चौरासी लाख जीया जून का सरदार कहकर ब्यान किया है। इसे नर–नारायणी देह कहकर भी ब्यान किया गया है कि नारायण खुद इस देह में रहता है यह दिन–रात कितने दुख उठा रही है।

किसी को कर्ज देने का दुख है और किसी को पैसे रखने का दुख है। किसी का जवान लड़का गुजर जाता है बहू विधवा हो जाती है। कोई शादी करके लाता है बहु गुजर जाती है बेटा विदुर हो जाता है। मेरे पास ऐसे लोग आते हैं तो मेरा दिल पिघल जाता है। मैं कहता हूँ, ''प्यारेयो! यह बुरे कर्मों की सजा है। ऐसे ही एक–दूसरे के मुँह चिकने चुपड़े दिखते हैं। दुनियां फोड़े की तरह भरी हुई है अगर हम इंसानी जामे में इतने दुखी हैं तो और किस जामे की आशा लगाए बैठे हैं।''

परमात्मा जिन आत्माओं पर दया करता है उनका मिलाप सतगुरु से करवाता है। सतगुरु जिस पर रहम करते हैं उसे नाम के साथ जोड़ते हैं।

सतगुरु सज्जन मिलया, नानक नाम मिले तां जीवां।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

प्यारेयो! हम कह देते हैं कि यह तो सतसंग में जाता है। सोचकर देखें! उसकी किस्मत में सतसंग में जाना लिखा है तो वह सतसंग में जाएगा ही और जिसकी किस्मत में सतसंग नहीं लिखा वह भी खाली नहीं बैठेगा किसी की निन्दा–चुगली ही करेगा।

मैं जिस समय 77 आर.बी. में रहता था उस समय मेरी सेवा में एक ही प्रेमी था। वह सुबह बाहर से ताला लगा देता और शाम को ही खोलता था। मैं शाम को आठ बजे से नौं बजे एक घंटे के लिए ही बाहर आता था। वहाँ के कुछ प्रेमी जल्दी–जल्दी अपना काम खत्म करके मेरे पास आते कि बाबा जी बाहर आएँगे तो हम उनके वचन सुनेंगे। वे वचन सुनकर अपने घर जाकर सो जाते थे कि सुबह जल्दी काम पर लग जाएंगे। जो लोग मेरे पास नहीं आते थे उनके घरों में औरते बच्चों को मारती। जब आदमी घर आता तो औरतें उससे कहती कि घर में लकड़ियाँ नहीं हैं, गेहूँ नहीं हैं, मिर्चें नहीं है वह घरवाली से लड़ता। फिर वे लोग कहते कि हमसे अच्छे तो वही हैं जो अपना काम जल्दी निबटाकर रब का नाम भी सुन आते हैं और जल्दी सो भी जाते हैं। सोचकर देखें! इन्हें कोई फीस तो नहीं देनी पड़ती थी ये किस्मत में सतसंग लिखवाकर ही नहीं लाए।

भाई सुंदरदास महाराज सावन सिंह के दर्शनों के लिए पैदल चलकर जाया करता था। मेरे पिछले गाँव से यह फासला पाँच सौ किलोमीटर है। एक बार मैंने सुंदरदास को सौ रूपये देकर कहा कि तू ट्रेन पर जाना। थोड़ा समय तो उसने वे रूपये अपने पास रखे फिर वे रूपये मुझे वापिस देकर कहने लगा मैं ये रूपये कहाँ सँभालता रहूँगा। परमात्मा ने दो टाँगे दी हैं मैं पैदल ही चलकर जाऊँगा। जो कुछ महाराज सावन ने सुंदरदास को दिया वह हमें पता है कि उस पर परमात्मा सावन की कितनी बख्शीश थी ।

जब सुंदरदास का अन्त समय आया तो उसने पहले ही संगत में बता दिया कि मैंने जाना है प्रसाद कर लें। मैंने अपने हाथों से स्नान करवाकर

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

उसे बिठा दिया उस समय उसके चिह्न चक्र महाराज सावन जैसे थे। मैंने लाला जी से कहा, ''तूने सावन नहीं देखा, उनकी पिक्चर तो देखी है सावन में और इसमें कोई फर्क नहीं; सावन ने इसे अपना ही रूप बना लिया है। सुंदरदास की मेरे साथ आठ–आठ घंटे की बैठक होती थी। उसने दवाई लाकर अलमारी में नहीं रखी थी।''

बिन भागां सतसंग न लब्भे बिन संगत मैल भरीजे जीओ।

पापों की मैल महात्मा की संगत से उतरेगी, नाम के बिना मुक्ति नहीं। गुरु के बिना नाम नहीं मिलता। महात्मा की बानी में सतगुरु की महिमा है।

जन नानक बिन आपा चीन्हे, मिटे न भ्रम की काई।

प्यारेयो! आपको नाम की कमाई करनी पड़ेगी। मोती निकालने के लिए गहरे समुद्र में डुबकी लगाने की प्रेक्टिस करनी पड़ती है। सोना खान को खोदकर ही निकाला जा सकता है। बगैर तकलीफ माता बच्चे को जन्म नहीं दे सकती। हर काम मेहनत माँगता है। जमींदारा मोटा सा काम है अगर जमींदार मेहनत नहीं करेगा तो क्या अच्छी फसल अपने घर ले जाएगा? मेहनत का फल तो परमात्मा देता ही है।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज एक बहुत ही महान सतगुरु हुए हैं। आपको गुरु ग्रन्थ साहब लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरु ग्रन्थ साहब रुहानियत का खजाना है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सिक्खों के पास रूहानियत का एक बहुत बड़ा खजाना है लेकिन इन बेचारों को पता नहीं कि इसमें से मोती कैसे निकालने हैं? हम भूले जीव सन्तों के पास जाते तो हैं लेकिन सन्तमत को समझते नहीं।''

गुरु अर्जुनदेव जी के सगे भाई पृथ्वीचंद ने आपको बहुत कष्ट दिलवाए। कमाई वाले महात्मा जायदादों या डेरों पर कब्जा नहीं करते। गुरु अर्जुनदेव जी ने अपने पिता का दिया हुआ सब कुछ ही पृथ्वीचंद को दे दिया फिर भी पृथ्वीचंद का मन शान्त नहीं हुआ। पृथ्वीचंद ने उस वक्त के बादशाह को

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बहकाकर गुरु अर्जुनदेव जी को गर्म तवे पर बिठाया, सिर में गर्म रेत डलवाई। सोचकर देखें! उस महात्मा का क्या कसूर था।

एक स्कूल में बहुत से बच्चे पढ़ते हैं। एक बच्चा मेहनती है उस्ताद का आज्ञाकार है उस्ताद को खुश कर लेता है उस्ताद उसकी तरफ ज्यादा तवज्जो देता है। उन बच्चों में से कई बच्चे उस स्कूल में ही प्रोफेसर बन जाते हैं लेकिन डिग्री वही दे सकता है जिसे गवर्मेन्ट की तरफ से इज़ाजत होती है इसी तरह सन्त भी रुहानियत का स्कूल खोलते हैं। वे आत्माओं को अध्यापक की तरह पढ़ाते हैं कि तुमने 'नाम' जपकर किसी पर एहसान नहीं करना; अपने आप पर रहम करना है। जो अपने पर रहम करेगा उस पर परमात्मा भी रहम करेगा। सब सन्त कहते हैं कि परमात्मा एक है उससे मिलने का साधन और तरीका भी एक है।

इस बानी में सन्तों की निशानियाँ लिखी हुई हैं। सन्त संसार में परोपकार के लिए आते हैं। वे किसी पर बोझ नहीं बनते। उनके अंदर दुनियां में डेरे बनाने की चाहत नहीं होती, वे 'नाम' का दीपक जलाते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्तों का स्कूल रुहानियत का स्कूल है जहाँ आत्मा की पढ़ाई कराई जाती है। परमात्मा हर एक के अंदर है जिसको मिला है उसे अंदर से ही मिला है।'' आपके आगे गुरु अर्जुनदेव जी महाराज का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है गौर से सुनें:

चरण पए सन्त बोएथाँ तरे सागर जेत।।

अगर हमने दरिया पार करना है तो हम मल्लाह के पास जाते हैं मल्लाह खतरनाक लहरों का वाकिफ होता है। दरिया के अंदर निशान भी होते हैं अगर आप नाव इस तरफ से लेकर जाएंगे तो खतरा है। मल्लाह सुरक्षित पानी में से नाव निकालकर हमें ठिकाने पर पहुँचा देता है।

अगर हमने अमेरिका जाना हो तो हम वहाँ पैदल नहीं जा सकते। अमेरिका यहाँ से दस हजार मील है, सात समुद्र पार करने पड़ते हैं। हम

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हवाई जहाज वाली कंपनियों के पास जाते हैं फिर हम हवाई जहाज के कैप्टन पर भरोसा करते हैं। हम हवाई जहाज में सोए होते हैं कैप्टन हमें दस–बारह घंटे में सुरक्षित वहाँ पहुँचा देता है। मुझे जिन्दगी में उड़ान करने का बहुत मौका मिला है। मैंने कई–कई घंटे लेटकर, सोकर, बैठकर हवाई सफर किया है। हमें अपने इंजीनियरों पर भरोसा है कि इन्होंने पक्का जहाज बनाया है वे सही चढ़ाना और उतारना भी जानते हैं। हम अपनी जिंदगी उनकी लियाकत के हवाले कर देते हैं।

इसी तरह हम सन्तों के पास भी जाते हैं सबसे पहले हमें भरोसा बनाना पड़ता है अगर भरोसा नहीं तो हम आगे चल ही नहीं सकते। गुरु नानकदेव जी महाराज भी कहते हैं:

सतगुरु है बोहिथा शब्द लंघावण हारु।

परमात्मा ने नाम का बेड़ा बनाकर उस बेड़े को सन्तों के हवाले किया है; सन्त ही उसके कैप्टन होते हैं। वे भवसागर की लहरों के वाकिफ़ होते हैं। जो लोग पक्के मन से उस बेड़े पर सवार हो जाते हैं सन्त उनकी आत्मा को भवसागर से पार ले जाते हैं। वहाँ जाति–पाति, बिरादरी और मुल्क़ का सवाल नहीं। सन्तों की संगत में आकर ये सवाल नहीं होता कि तू गरीब है, अमीर है, औरत है या मर्द है। सबमें एक ही आत्मा है। सूरज सबको एक जैसी ही रोशनी देता है। जब किरण जमीन से टकराकर धूप पैदा करती है उसकी क्या जाति है? वही जो सूरज की है।

शुरू में गुरमेल सिंह ने भजन में बोला है कि हमारे सगे–संबंधी लाश को चिता पर रखकर जला आते हैं। हिन्दू है तो जलकर राख की मुट्ठी बन जाती है अगर मुसलमान है तो दफना दिया जाता है तो दलों के दल ही कीड़े पैदा हो जाते हैं। यह इस तन की वड़ियाई है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

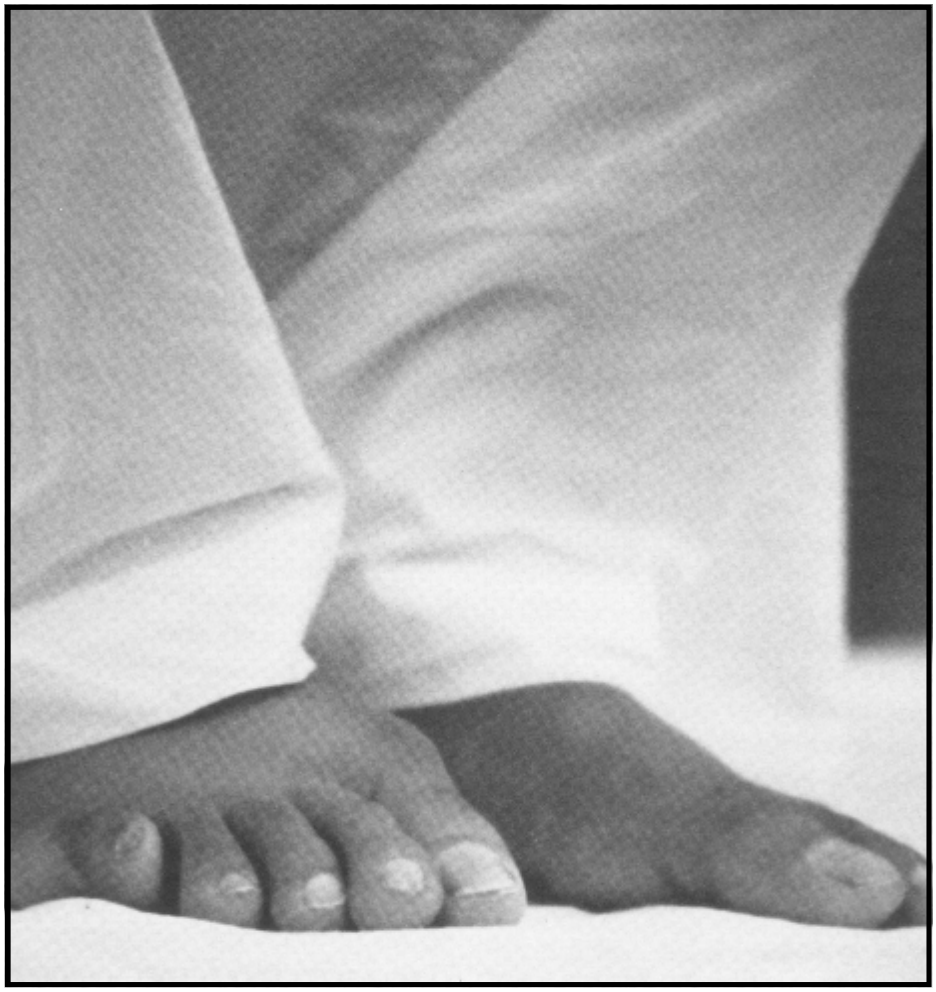

अगर हमें बाहर के **गुरु चरन** नहीं मिले, अंदर के **चरन** मिलने का सवाल ही पैदा नहीं होता। सन्त–सतगुरु हम जीवों की खातिर अपना शान्ति का देश छोड़कर यहाँ आते हैं। वे इस संसार में छोटा–सा जीवन व्यतीत करते हैं, हमारी तरह रहते हैं, बोलते हैं लेकिन अंदर से उनका ख्याल और ही होता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

अंतर जोत निरंतर बानी।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सबके अंदर राम नाम की जोत है। आप उसे आवाज कह लें, रब्बी बानी कह लें, कलमा कह लें, चाहे ताकत कह लें। जब हम सन्तों की बताई हुई युक्ति के मुताबिक फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे ले आते हैं, आँखों के पीछे आकर स्थूल पर्दा उतर जाता है; आगे सूक्ष्म है जब हम उसे भी उतार देते हैं सूरज, चंद्रमा, सितारे पार कर जाते हैं सतगुरु का नूरी स्वरूप आता है, वे नूरी **गुरु चरन** सदा सेवक के साथ रहते हैं।

महाराज कृपाल शमस तबरेज़ की मिसाल दिया करते थे कि लोग नहीं जानते कि हम किस देश के पक्षी हैं और हम क्या गाते रहते हैं। हम परमात्मा के साथ एक खास वायदा करके इस संसार में आए हैं। हम परमात्मा के हुक्म से इस संसार में दो मिनट से ज्यादा नहीं रह सकते। बेशक हम देखने में गरीब नज़र आते हैं लेकिन अंदर से हम बादशाहों के बादशाह हैं। वे ही कंगाल है जिनके अंदर ख्वाहिशें उठती हैं। हम वह मुर्ग हैं जो रोज सोने का अंडा देते हैं, सोने के अंडे का भाव नाम की ज्योति है। सतगुरु नाम रूप होकर अंदर नाम की ज्योति जगाता है क्योंकि परमात्मा हम सबके अंदर जोत रूप, नाद रूप होकर विराजमान है।

तुलसी साहब कहते हैं, ''जब तक आप क्षण–क्षण अपने फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे लाकर लगन से अभ्यास नहीं करेंगे तब तक आपके अंदर नूरी **गुरु चरन** प्रकट नहीं होंगे।'' गुरु तेग बहादुर कहते हैं:

गुरु चरण दिए मन होड़िऐ।

मन को काबू में करना है तो इसे **गुरु चरनों** में लगाएं। जब गुरु का स्वरूप अंदर प्रकट हो जाता है तब सेवक की ड्यूटी समाप्त हो जाती है। आगे गुरु उनको एक मण्डल से दूसरा मण्डल पार कराएगा क्योंकि वह साथ है अगर बाहर **गुरु चरनों** से प्यार होगा तो ही हम अंदर जा सकते हैं; नहीं तो अंदर दरवाजा ही नहीं खुलता।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मार्ग पाए उद्यान में गुरु दसे भेद।।

हम आँखें बंद करते हैं अंधेरा है। मुँह में निवाला डालते हैं पता नहीं वह किस तरफ चला जाता है हमें पता नहीं कि परमात्मा कहाँ है? गुरु अज्ञानता के अँधेरे को दूर करके हमें रास्ता बताता हैं। हम जिस रास्ते से रोज़ गुजरते हैं कभी–कभी उन गलियों सड़कों को भूल भी जाते है।

मैं जब पहली बार अमेरिका गया रसल पर्किंस मुझे लेने के लिए आया। रसल पर्किंस एक घंटे तक कार को वहीं घुमाता रहा हालाँकि वह सारी जिंदगी वहीं कार चलाता रहता है। हमें पता नहीं था कि सन्त बानी को कौन सा रास्ता जाता है। जहाँ हम हमेशा फिरते हैं कभी–कभी दुनियां कि भूल भुलैया में उस रास्ते को भी भूल जाते हैं। गुरु साहब कहते हैं:

जिस मार्ग के गने जाए न कोसा, हरि का नाम उहाँ संग तोसा।

हमें जिस रास्ते का पता ही नहीं कि यह रास्ता कितना लम्बा चौड़ा है क्या हम उसे पार कर लेंगे? आप किसी भेदी को साथ लें जो वहाँ जाता है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

परमात्मा ने यह बेड़ा सन्तों के हवाले किया है जो लोग पक्के मन से इस बेड़े में सवार हो जाते हैं सन्त उनको भवसागर की लहरों से पार ले जाते हैं। जो डाँवाडोल मन से इस बेड़े में चढ़ते हैं वे भंवरजाल में पड़े बेड़े की तरह इस संसार में ही रह जाते हैं।

हर हर हर हर हर हरे हर हर हेत।

आपको नाम का जो मंत्र बताया गया है, आप उस मंत्र को उठते, बैठते, सोते, जागते जपें। सोते हुए भी आपको वह मंत्र याद होना चाहिए। कबीर साहब कहते हैं:

सुपने हूँ बरड़ाइके जे मुख निकसे राम।
ताके पग की पनही मेरे तन को चाम।

अगर कोई ऐसा मिल जाए जो स्वपन में बड़बड़ाते हुए भी 'नाम' का सिमरन कर रहा हो या गुरु उसकी आँखों के आगे हो! वह चाहे मेरे तन की जूतियाँ भी बना ले तो भी मैं यही कहूँगा कि मैं किसी लेखे लगा हूँ लेकिन हमारे स्वपनों में आता है पकड़ो, मारो, कभी डूब गए कभी भागे फिरते हैं। कई–कई दिन हमारा चित्त खुष्क रहता है।

उठत बैठत सोवते हर हर हर चेत।

महात्माओं की बानी डराने के लिए नहीं होती। पुराणों में नर्कों के दुख बताए गए हैं और स्वर्गों का लालच दिया गया है लेकिन सन्त सुनी सुनाई बात नहीं करते उन्हें अंदर जो तजुर्बा होता है उसी को बाहर लिखते हैं। आप उठते, बैठते, जागते और सोते हुए भी सिमरन न छोड़ें।

पंच चोर आगे भगें जब साध संगेत।

सन्त इन्हें कहीं पाँच डाकू, कहीं लुटेरे, कहीं चोर कहते हैं। चोर उसे कहते हैं जो दूसरे का धन–दौलत लूट ले। हम बहुत पढ़े–लिखे और समझदार होते हुए भी इनके शिकार हो जाते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कामी क्रोधी लालची इनसे भक्ति न होए।
भक्ति करे कोई सूरमा ते जाति वर्ण कुल खोए।

वही सूरमा बचेगा जो इनसे लड़ेगा। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

उनसे राखे बाप न भाई उनसे राखे मीत न भाई।
दरब सियानप न वो रहते साध संगत दुष्ट वस होते।

कहीं दिल में ख्याल हो कि पैसों से अमीर लोग इन पाँच डाकुओं को वश में कर लेंगे या माता पिता, भाई बहन इनसे बचा लेंगे! हम इन पाँच दुष्टों को किसी पूर्ण महात्मा की संगत में जाकर ही वश में कर सकते हैं क्योंकि सतसंग में ही हमें अपनी गलतियों का पता लगता है। हम अपनी गलतियों को सुधारेंगे तो ही इन पाँच दुष्टों से बच सकेंगे। आप सोते–जागते, उठते–बैठते सिमरन करेंगे तो ये पाँचों चोर भाग जाएँगे।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''ये पाँचों डाकू लड़को की तरह बताकर जाते हैं; काम कहता है आज मैं जा रहा हूँ, क्रोध कहता है अब मैं भी जा रहा हूँ। जिस तरह नशा छुड़ाने वाले नशा छुड़ाने के बाद बोतल वाले को बोतल दिखाते हैं तो नशा करने वाले को घबराहट होती है वह कहता है इसे दूर ले जाएं।''

प्यारेयो! अगर घर का मालिक सोया हुआ है तो चोर जो मर्जी करे। एक चोर ही सारी जायदाद ले जाता है, जिस घर में पाँच चोर घुस जाएं उस घर का क्या होगा? जब घर का मालिक जाग जाता है तब वहाँ चोर नहीं रह सकते। जहाँ पुलिस का राज्य है वहाँ चोर उचक्का नहीं रह सकता। जहाँ 'शब्द' का राज्य है वहाँ ये पाँच डाकु नहीं ठहर सकते, शब्द इनके लिए जहर है। इनके लिए 'शब्द' बड़ा पुलिस अफसर है।

पूँजी साबत घनो लाभ गृह शोभा सेत।

अगर आप जाग जाते हैं तो आपकी पूँजी बच जाएगी। जिस घर में पूँजी है वही घर अच्छा लगता है, उजड़ा हुआ घर कैसे अच्छा लगेगा! यह

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

शरीर भी हमारा घर है, यह बाजार तभी शोभा देगा अगर इसमें अच्छा माल होगा! अगर आपकी पूँजी को काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार लूट रहे हैं फिर यह घर कैसे शोभा देगा?

नेहचल आसन मिटी चिंत ना ही डोलेत।

परमात्मा नेहचल है। परमात्मा जन्म–मरण के दु:ख में नहीं आता। ऐसे भक्त को अंदर जाकर कभी न डोलने वाला आसन मिल जाता है।

भरम भुलावा मिट गया प्रभ बेखत नेत।

किसी को अच्छा बुरा कहना ही भ्रम है। जब मालिक अंदर प्रकट हो गया तो कोई भ्रम नहीं रहता। ओबराय साहब ने आपको जो शब्द सुनाया था उस सवाल जवाब में यही बताया गया था कि दोस्त दुश्मन में वही है। हम निन्दा करते हैं तो अपने गुरु की ही करते हैं अगर हमारा गुरु पूर्ण है वह शब्द सब में ही है। कभी–कभी गुरमेल यह शब्द बोलता है:

केहड़ा चंगा केहड़ा मंदा किंझ समझां।
अपणे दिल दा यार तकाज़ा किंझ समझां।

हे सतगुरु परमात्मा! हम कैसे समझें। समझने की बात 'नाम' की कमाई करना ही है। जब वह सबके अंदर बैठा है तो किसकी निन्दा करें! गुरु साहब कहते हैं:

बुरा भला तिचरु आखदा जिचरु है दुहु माहिं।
गुरमुखि एको बुझिया एकसु माहि समाहिं।

हम कह देते हैं कि हम सन्तों के सेवक हैं। हमें देखकर हमारे बच्चे अपने अंदर अभाव ले आते हैं कि यह 'नाम' लेकर आया है फिर यह किसी की निन्दा क्यों करता है; किसी को बुरा–भला क्यों कहता है? बच्चे मेरे पास आकर सवाल कर देते हैं तो मैं उन बच्चों से कहता हूँ, ''बेटा! अभी इसको पता नहीं है; परमात्मा दोस्त और दुश्मन सबके अन्दर है।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जब मैं पहले टूर पर अमेरिका गया तो कुछ लोगों का सिखाया हुआ एक आदमी मेरे पास आकर कहने लगा, ''मैं फलाने महात्मा के पास गया था मुझे उसमें कृपाल सिंह जी दिखते हैं लेकिन आपमें नहीं दिखते।'' मैं उसकी बात सुनकर हँसा और मैनें उससे कहा, ''मुझे तो पशु–पक्षी सबमें ही कृपाल दिखता है।'' यह सुनते ही उस बेचारे का सारा रंग उतर गया। उसने अभी तक मेरी सोहबत नहीं छोड़ी और मुझसे कहता है कि आप मेरे सिर पर हाथ रखें और मेरी आगे की जिम्मेवारी लें।

उस बेचारे को पता नहीं था कि वह जिस महात्मा से यह सवाल कर रहा है उस महात्मा ने अपनी ज़िंदगी में क्या किया है! जिसने अपने अंदर परमात्मा को प्रकट कर लिया है उसे कोई भ्रम नहीं रहेगा। गहना भी सोने का है और सोना तो सोना है ही। सन्त हर ख्याल को निकालकर परमात्मा के साथ जोड़ते हैं और वे खुद परमात्मा के साथ जुड़े होते हैं।

गुण गबीर गुण नाएका गुण कहिए केत।

ऐसे महात्मा के क्या गुण ब्यान करें? वह गुणों का भण्डार है। परमात्मा सारी बरकतें लेकर ऐसे महात्मा के अन्दर बैठ जाता है।

नानक पाया साध संग हर हर अमरेत।

गुरु साहब ने इस छोटे से शब्द में बताया कि जिसने नदी पार करनी है उसके लिए जरूरी है कि वह सबसे पहले मल्लाह के पास जाए। इसी तरह जिसने परमात्मा से मिलना है उसके लिए जरूरी है कि वे ऐसे महात्मा से मिले जिसने अपनी जिन्दगी में यह मसला हल किया हो। मैं बताया करता हूँ किसी महात्मा से 'नाम' लेने से पहले आप उसकी हिस्ट्री पढ़ें क्योंकि सोए हुए किसी का पर्दा नहीं खुलता।

आप बाबा सावन सिंह जी की हिस्ट्री पढ़ें। आपने बाईस साल तक गुरु की खोज की। आप यह कहा करते थे कि मैं जहाँ कहीं भी गया अभाव

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

लेकर नहीं आया। बाबा जयमल सिंह जी खुद चलकर सावन सिंह जी के घर गए। क्या उनको रास्ते में कोई इन्सान नहीं मिले थे? वह खास तरह के इन्सान थे जो अपने दिल में उनके लिए जगह बनाए बैठे थे।

इसी तरह महाराज कृपाल सीमाप्रान्त में रहते थे। आपके परम गुरु सावन सिंह जी डेरा ब्यास में रहते थे। आपको मिलने से सात साल पहले ही महाराज सावन आपको अंदर ही दर्शन देने लग गए थे। आपने बचपन से ही अपने अंदर जगह बनाई हुई थी।

इसी तरह यह गरीब आत्मा बचपन से उदास रहती थी। उसकी खोज में धूनियां तपाकर तन को जलाया। आखिर परम पिता कृपाल पाँच सौ किलोमीटर चलकर मेरे घर आए। उनके आस–पास बहुत लोग थे। संसार में ऐसा कौन सा मुल़्क है जो आपको नहीं जानता था? लेकिन जो उनके लिए जगह बनाए बैठा था उसके पास वह अपने आप ही आ गए।

अगर आपने नदी पार करनी है तो किसी ऐसे मल्लाह के पास जाएं जो नाव चलानी जानता हो तभी आप नदी पार कर सकते हैं। इसी तरह जिस महात्मा ने खुद कमाई नहीं की, वह आपका पर्दा किस तरह खोलेगा!

महाराज कृपाल ने अभ्यास के लिए रावी नदी को चुना। आप रावी नदी में खड़े होकर अभ्यास किया करते थे। आप एक बार रात के समय रावी नदी पर जा रहे थे रास्ते में एक सिपाही मिला। उस सिपाही ने पूछा कि आप इस समय कहाँ जा रहे हैं? आपने उससे कहा, ''नाम जपने के लिए जा रहा हूँ तू भी मेरे साथ आ जा।'' सिपाही ने कहा आपको मुबारक। अब ठंडे पानी में कौन जाए? जो लोग रावी नदी में नहाए हैं वे जानते हैं कि रावी और चनाव नदी का पानी बहुत ठंडा है। महात्मा अपनी ज़िंदगी में बहुत मेहनत करते है। मैंने एक भजन में लिखा है:

रंगरलियां माणदेयां पड़दे नां खुलदे करनी पवे कमाई।
मन मारना पवे सिर वारना पवे तां पहुँचे सतगुरु कोल वे।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

काम, क्रोध से बचने की खातिर सन्त हमें 'नाम' की दवाई देते हैं। जो लोग इस दवाई को श्रद्धा–प्यार से खाते हैं वे बच जाते हैं। जो दवाई को घर लाकर रख देते हैं उन्हें क्या फायदा होगा?

यह बहुत पुरानी बात है और मैंने पहले भी यह बात कई बार बताई है कि गाँव ताखरावाला का एक प्रेमी ब्यास से 'नाम' लेकर आया। उस गाँव में काफी सतसंगी थे। वह गाँव में आकर कहने लगा कि ब्यास में यह बताते हैं; उसने वह 'नाम' लिखकर अपनी दुकान के आगे लगा दिए। वहाँ के कुछ सतसंगी परेशान होकर मेरे पास आए। मैं उनकी बात सुनकर हँस पड़ा। मैंने कहा, ''महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कुत्ता अगर कपास के खेत में चला जाए तो वह उससे सूट नहीं बनवा सकता। नाम तवज्जो है अक्षर नहीं। उस तवज्जो के पीछे सन्तों का तप और त्याग होता है। किसी सन्त का दिया हुआ नाम ही कारगर होता है।''

अगर दो अक्षर यहाँ से सीखे और दो अक्षर वहाँ से सीखे और फिर लोगों को बताए तो उसका अपना ही नुकसान है। 20–25 दिन के बाद उस प्रेमी को बुखार हो गया। बुखार इतना तेज हुआ कि ऐसा लगे कि यह थोड़ी देर में मर जाएगा। उस गाँव में महाराज कृपाल का नामलेवा धौंकड़नाथ था। वे लोग उसके पास गए कि तू हमारी मदद कर। धौंकड़नाथ ने कहा कि ये नाम के अक्षर जो तुमने लिखकर दुकान के आगे लगाए हैं इन्हें घोलकर इसे पिला दो। जब हम मुश्किल में होते हैं तो सब कुछ करते हैं। उन्होंने दीवार पर लगे हुए मैले कागज़ को घोलकर उसे पिला दिया।

प्यारेयो! अगर आप शौक से 'नाम' लाए हैं तो श्रद्धा–प्यार से नाम की कमाई करें अपने घर पहुँचें। **गुरु चरन** भवसागर को पार करने के लिए नाव का काम करते हैं। जो लोग श्रद्धा, प्यार से इस नाव में बैठ जाते हैं गुरु उनको पार ले जाते हैं जो लोग डाँवाडोल मन से इस पर चढ़ते हैं वे भंवरजाल में फँसी नाव की तरह यहीं रह जाते हैं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हमारे यहाँ एक प्रेमी बूटा सिंह है। उसने मुझसे पूछा कि आप सरसों कब बीजेंगे? मैंने उससे कहा, ''हमारी नहर में बहुत कम पानी आता है हम आगे–पीछे नहीं देखते जब पानी मिल जाए सरसों बीज देते हैं।'' मैंने उसे महाराज सावन सिंह जी का वाक बताया कि किसी ने एक बार आपसे पूछा कि खाना कब खाना चाहिए? तब सावन सिंह जी ने कहा, ''भाई! गरीब को जब भी मिल जाए तभी खा ले; अमीर को जब भूख लगे तब खाए।''

प्यारेयो! जब तक हमारा पर्दा नहीं खुल जाता हम सच्चखंड नहीं पहुँच जाते तब तक हम अति गरीब हैं। हमें सुबह, शाम, दोपहर, चलते–फिरते जब भी मौका मिल जाए 'नाम' जप लेना चाहिए। जिसका पर्दा खुल गया है जो सच्चखंड पहुँच गया है उस प्रेमी की ऐसी हालत हो जाती है:

भजन तेल की धार साधना अधके साधी।

जिस प्रेमी की वृति नहीं टूटती जो राम रूप हो गया है वह कहता है कि मैंने बहुत कष्ट उठाए हैं अब राम मुझे याद करे। कबीर साहब कहते हैं:

माला फेरूँ हर भजूं मुख से कहू ना राम।
मेरा राम मुझे भजे मैं करूँ विश्राम।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने इस छोटे से शब्द में बताया कि किस तरह हम इस भवसागर से पार हो सकते हैं। आज का काम कल पर न छोड़ें। हमे भी चाहिए कि गुरु साहब के कहे अनुसार उस पर अमल करें अपने जीवन को पवित्र बनाए।

गुण गबीर गुण नाएका गुण कहिए केत।
नानक पाया साध संग हर हर अमरेत।

* * *

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

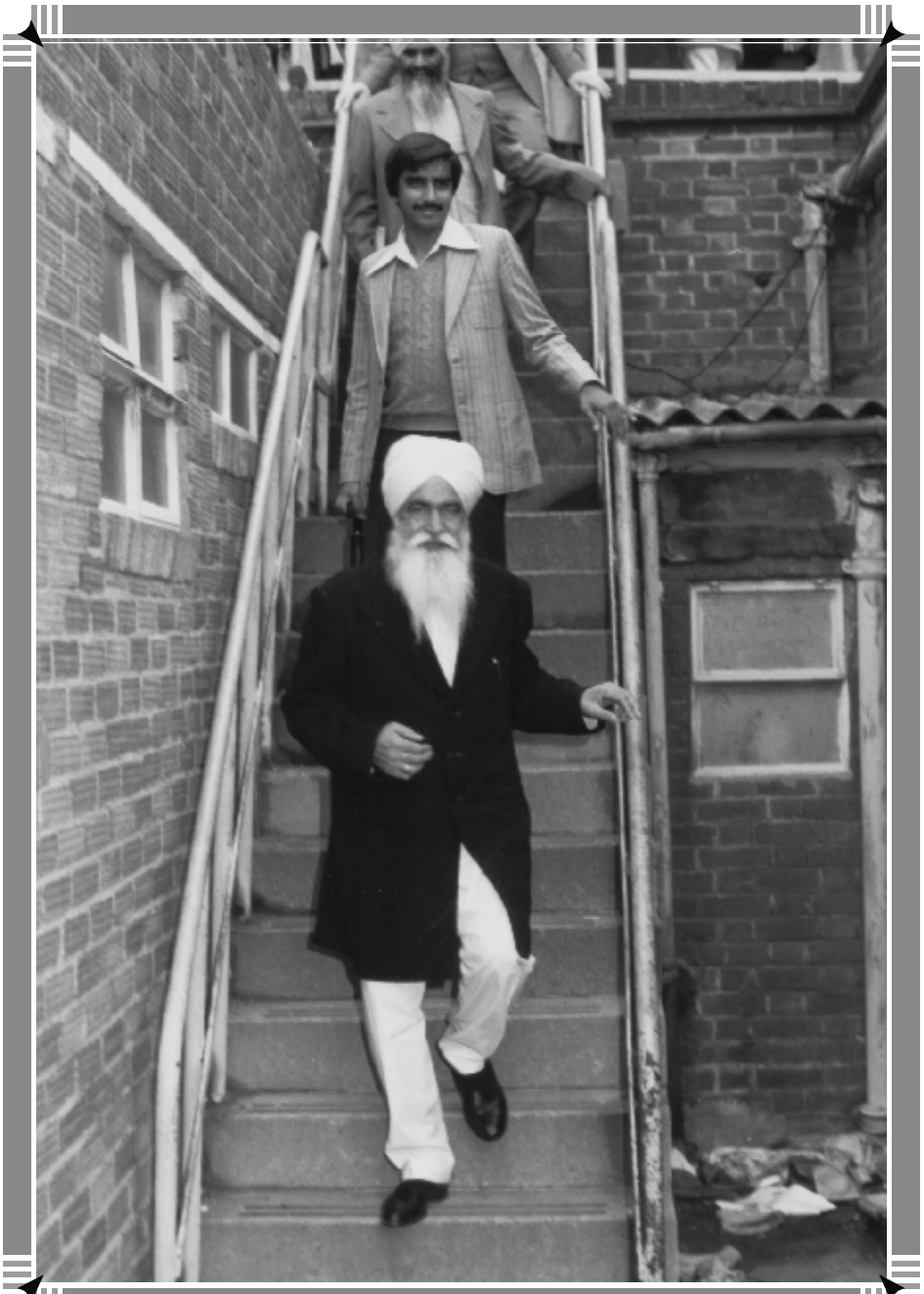

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

मुम्बई

एक प्रेमी : *अगर सतसंगी को दोबारा जन्म लेना पड़े तो क्या वह दूसरे जन्म में अपने गुरु को याद रखता है?*

बाबा जी : सतगुरु की ज्यादा से ज्यादा कोशिश होती है कि सेवक को दूसरा जन्म न दिया जाए; इसी जन्म में साफ करके ले जाया जाए अगर ऐसा कोई कारण बन जाता है तो उसका अगला जन्म अच्छा होगा, अच्छे ख्याल होंगे लेकिन गुरु जरूर मिलेगा और उसके अंदर पहले से ज्यादा तड़फ होगी लेकिन हमें मन के अंदर ऐसी कमजोरी नहीं आने देनी चाहिए।

हर सतसंगी के अंदर पक्का विश्वास होना चाहिए कि मैंने इस सड़ती–बलती दुनियां में दोबारा नहीं आना, गुरु इसी जन्म में मेरा बेड़ा पार करे। भाई सुंदरदास, महाराज सावन सिंह जी का बड़ा अच्छा अभ्यासी सेवक था। वह कई साल मेरे पास रहा है। समय आने पर आपको महाराज कृपाल के साथ उसके अभ्यास की कहानियाँ सुनने को मिलेंगी।

सुंदरदास आमतौर पर पैदल चलकर महाराज सावन सिंह जी के दर्शनों के लिए जाया करता था। वह कभी बस या ट्रेन पर नहीं चढ़ा था। वह एक बहुत मेहनती आदमी था। एक आदमी ने उसे सलाह दी, ''सुंदरदास! तू साईकिल चलानी सीख ले।'' सुंदरदास ने कहा, ''भगवान ने टाँगें चलने के लिए दी हैं न कि साईकिल चलाने के लिए दी हैं।'' फिर उस आदमी ने कहा, ''तू धर्मराज को क्या जवाब देगा?'' सुंदरदास ने कहा, ''मेरा धर्मराज से क्या वास्ता। मेरा गुरु पूरा है। महाराज सावन सिंह जी मुझे लेने आएंगे।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जब सुंदरदास ने चोला छोड़ा उस समय सैकड़ों आदमी मौजूद थे। उसने छः महीने पहले ही बता दिया था कि मेरी तैयारी है। उसने संसार छोड़ने से दो–तीन घंटे पहले ही बता दिया कि इस समय मेरी तैयारी है, प्रसाद करें। हमने प्रसाद किया और उसने चोला छोड़ दिया। हमें भी सुंदरदास की तरह भरोसा रखना चाहिए कि हमारा गुरु पूरा है; हमारा धर्मराज और दूसरे जन्म से क्या वास्ता।

एक प्रेमी : *जिसके अंदर अहंकार भरा हुआ है वह अपने आपको दूसरों से बड़ा समझता है। हम इस दोष से कैसे उभर सकते हैं?*

बाबा जी : सन्त कहते हैं कि सब बीमारियों की दवाई 'नाम' है गुरु कुल मालिक शब्द में समाया होता है। वह कुल मालिक होकर भी अपने अंदर बहुत नम्रता रखता है अगर हम इस बात को समझ लें और शब्द–नाम की कमाई करें तो स्वाभाविक ही हमारे अंदर नम्रता आ जाती है।

सबसे पहले हमें यह सोचना चाहिए कि हम किस चीज़ का अहंकार करते हैं? जो वस्तु हमारे साथ नहीं जाएगी उसका क्या अहंकार करें! शब्द–नाम ही हमारे साथ जाएगा। गुरु ने दया करके हमारे अंदर शब्द–नाम टिकाया है। जब हम शब्द–नाम की तरफ तवज्जो देते हैं तो जो गुण गुरु में हैं वे गुण हमारे अंदर टिकने शुरु हो जाते हैं, हमारे अंदर से अहंकार और ऐब निकलने शुरु हो जाते हैं।

सन्त हमेशा ही बताते हैं कि दुनियां में कायर बनकर नहीं बहादुर बनकर जिऐं, दुनियां की असलियत को समझें। परमात्मा ने यह दुनियां अच्छी बनाई है लेकिन आप इसे अपना न समझें। दुनियां की चीज़ें हमारी सेवा के लिए बनी हैं हम इनके सेवादार बनकर न बैठ जाएं। पति–पत्नी का रिश्ता अटूट होता है अगर वे अहंकार करें कि हम ही सब कुछ हैं तो उन्हें यह भी सोचना चाहिए कि ऐसा समय भी आएगा जब वे एक–दूसरे की मदद भी नहीं कर सकेंगे।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बेटे–बेटियों का अहंकार है क्या वे हमारे साथ जाएँगे? जायदाद का अहंकार हैं क्या जायदाद हमारे साथ जाएगी? सेहत का अहंकार हैं? दो दिन बुखार हो जाए मुँह पीला पड़ जाता है। धन–दौलत का अहंकार हैं? यह वृक्ष की छाया है आज किसी के पास है तो कल किसी और के पास चली जाएगी। जवानी का मान हैं? जो आज बुढ़े हो गए हैं कल वे भी जवान थे आज घरों में उनकी पूछ–ताछ नहीं। संसार में अहंकार करने वाली कोई भी चीज़ नहीं है। हम अज्ञानतावस अहंकार करते हैं कि मेरी पत्नी है, मेरे बच्चें हैं, मैं आलम फाज़ल हूँ, मैं धनी हूँ लेकिन जब आँख खुलती है हम परमात्मा से मिल लेते हैं तब हमें सच्चाई का पता लगता है।

महाराज सावन कहा करते थे कि कंजरों के यहाँ एक नौकर था। किसी ने उससे पूछा क्या तनख्वाह मिलती है? उसने कहा कि रोटी, कपड़ा और तमाशा मुफ्त में। हमारी यही हालत है, हम यहाँ से क्या लेकर जाएँगे? इंसान मुट्ठी बंद करके जन्म लेता है और हाथ पसारकर चला जाता है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''हौमें बड़ा दीर्घ रोग है। यह ला–ईलाज है मीठी तपेदिक न छूटने वाली बीमारी है लेकिन जिसके ऊपर तू दया करता है वे तेरे दिए हुए 'शब्द–नाम' की कमाई करते हैं। इसांन को एक रोग नहीं कई प्रकार के रोग लगे हुए हैं।'' गुरु नानकदेव जी ने अपनी बानी में इन रोगों का वर्णन किया है कि हौमें का रोग मनुष्य के हिस्से में आया है। मनुष्य को काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के रोग लगे हुए हैं।

मृग मीन पतंग कुंचर एक दोख बिनास।
पाँच दोख असाध जामे ताकि केतक आस।

मृग को कानों का रोग है। मृग शब्द सुनकर बहुत खुश होता है। शिकारी लोग जंगल में जाकर एक तरह का बाजा बजाते हैं जिसे कंडाहेड़ी का शब्द भी कहते हैं। मृग उस बाजे के बस में आकर अपना सिर शिकारी के घुटनों पर रख देता है हालाँकि उसे पता है कि अगर मैं बाजे के

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

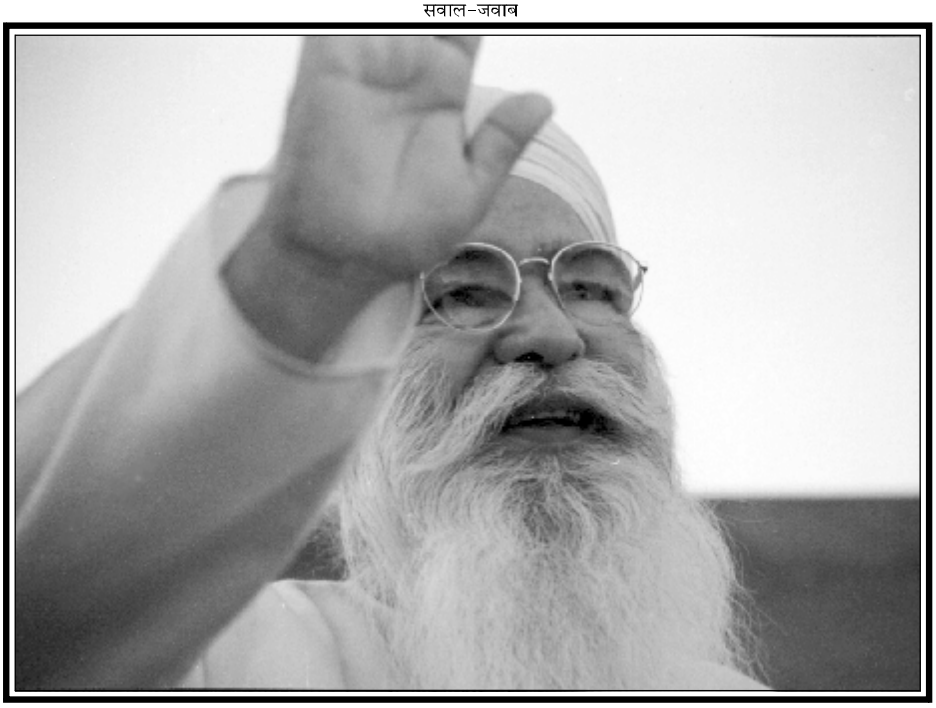

नजदीक गया तो मेरी मौत है लेकिन वह इतना मस्त होता है कि उस आवाज को अपने कानों से नहीं निकालना चाहता फिर उसे पुर्जा–पुर्जा कटवाकर हांडियों में चढ़ना पड़ता है। एक रोग ही मृग की जान ले लेता है।

दृष्टि रोग पच मोए पतंगा।

पतंगे को आँखों का रोग है। पतंगा दीपक की रोशनी पर जलना जानता है। बेशक किसी भी जाति का दीपक जलता हो पतंगा दीपक को देखकर रह नहीं सकता। वह जानता है अगर वह दीपक के नज़दीक गया तो उसके पंख जल जाएंगे, उसकी मौत हो जाएगी और जलने का कष्ट भी होगा लेकिन आँखों के रोग की वजह से वह अपनी जान दे देता है।

मीन को जीभ का रोग है। शिकारी लोग उसकी कमजोरी का फायदा उठाते हुए कुंडी में माँस का टुकड़ा लगाकर पानी में फैंक देते हैं। मीन यह नहीं सोचती की कुड़ी मेरे गले में फँस गई तो मेरी मौत हो जाएगी; वह माँस

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

को मुँह में डालती है लेकिन कुड़ी गले में फँस जाती है। शिकारी उसे बाहर खींच लेते हैं फिर उसे कीमा–कीमा होना पड़ता है। जुबान का चस्का मीन की जान ले लेता है।

हाथी को काम का रोग है। हाथी को पकड़ने वाले बहुत गहरा गड्ढा खोदकर उसके ऊपर मामूली सी घाँस–फूँस की छत डाल देते हैं। कपड़े या कागज की हथनी बनाकर उस गड्ढे के ऊपर खड़ी कर देते हैं। हाथी अपनी हवस को पूरा करने के लिए हथनी की तरफ दौड़ता है लेकिन गड्ढे में गिर जाता है; कई दिन भूखा–प्यासा रहता है। हाथी को पकड़ने वाले उसे तीखे–तीखे अंकुश मारकर पकड़ लेते हैं। इतना ताकतवार होते हुए भी हाथी इंसानों को अपनी पीठ पर उठाकर चलता है। वे लोग उस पर बहुत वजन भी डालते हैं। हाथी की एक कमजोरी उसे गुलाम बना देती है।

गुरु नानकदेव जी के समझाने का भाव यही है कि इतने शक्तिशाली जानवर एक–एक रोग से गुलाम बन गए, हांडियों में चढ़ गए। इंसान को तो पाँच रोग चिपटे हुए हैं। ये असाध्य रोग हैं हम इनसे बचने की क्या आशा कर सकते हैं? महात्मा हमें इनसे बचने का इलाज़ बताते हैं कि आप किसी ऐसे महात्मा की शरण में जाएं जो इन रोगों से बचा हुआ है।

रोग रहित मेरा सतगुरु योगी।

योगी अंदर जाकर परमात्मा से मिल चुका है। जब हम ऐसे योगी की शरण में जाते हैं तो वह हमें अपना तजुर्बा बताते हैं अगर आप 'शब्द–नाम' की कमाई करेंगे अंदर जाएंगे तो आप इन रोगों से बच सकेंगे।

आज का नौजवान अपनी सेहत का ख्याल नहीं रखता, जवानी आने से पहले ही अपने अंदर कमजोरी पैदा कर लेता है। आजकल डॉक्टर लोग अखबारों में इश्तिहार निकालते हैं अगर गई हुई जवानी प्राप्त करनी है तो हमसे मिलें। सन्त अपना तजुर्बा बताते हैं अगर एक बार जवानी हाथ से निकल जाए तो डॉक्टर तो क्या कोई भी हमें जवानी वापिस नहीं दे सकता।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

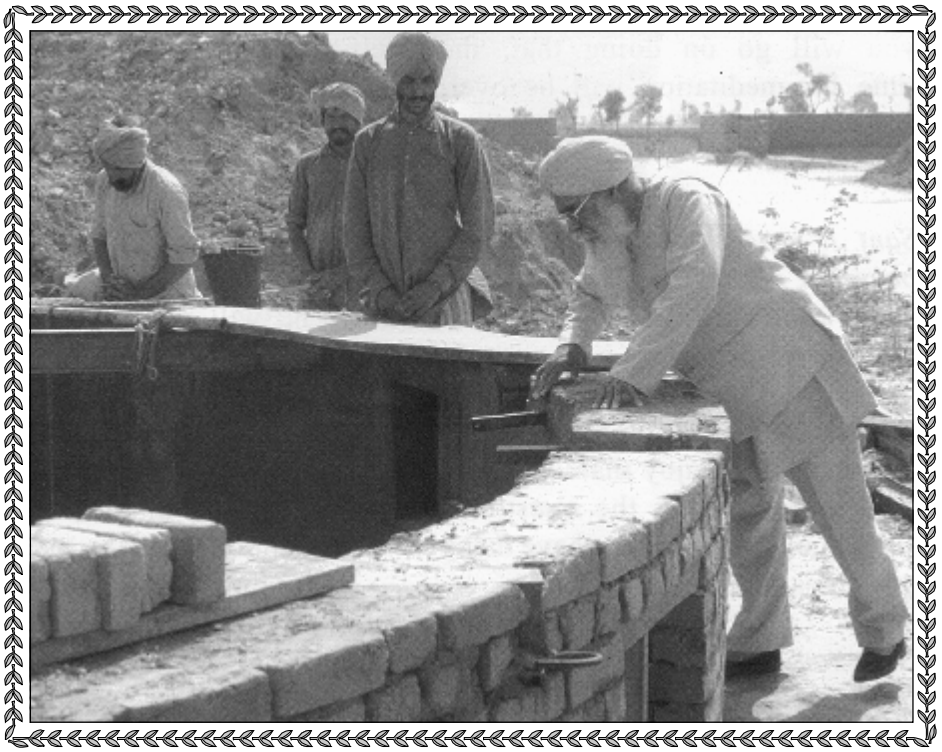

मुझे जिंदगी में अमीर से लेकर गरीब तक को मिलने का मौका मिला है। मैंने कोई इस रोग से बचा हुआ नहीं देखा। अमीर लोगों का तो ऐसा जीवन है कि वे चौबीस घंटे डॉक्टर को साथ लेकर चलते हैं; वे अपनी कमी दवाई से पूरी करते हैं अगर डॉक्टर उनकी देखभाल न करे तो उन्हें रात को नींद नहीं आती। हमें हमेशा 'शब्द–नाम' की कमाई करनी चाहिए तभी हम इन रोगों से बच सकते हैं।

सज्जनो! यह काल की नगरी रोगों का घर है। इंसान को और भी कई तरह के रोग परेशान किए रखते हैं। ऐसा नहीं कि कोई आदमी अपने हाथ पर कोयला रखकर कहे कि मेरा हाथ काला न हो; हाथ जरूर काला होगा। हमें गुरु की शरण और नाम की कमाई इन रोगों से बचा सकती है।

* * *

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com